तापमान
अधिकतम 33.2 डिग्री
न्यूनतम 14.6 डिग्री

हरिभूमि
रोहतक भूमि

रोहतक, रविवार, 24 मार्च 2024

11 ठहाके लगे तो कभी भावुक हुए श्रोता

12 इंडस स्कूल की जूनियर ब्रांच में होली मिलन समारोह

तीनों जलघरों में नाम मात्र ही बचा पानी, नहरों में भी नहीं आया

होली पर कंठ सूखे, दिन में एक ही समय हो रही पानी की सप्लाई, व्यर्थ न बहाएं

- जेएलएन और भालौठ सब्र ब्रांच में कई दिन से पानी की सप्लाई बंद
- कई क्षेत्रों में लोग महंगे दामों पर पानी खरीदने को मजबूर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

होली पर भी शहर में पानी की किल्लत देखने को मिलेगी। इसलिए आमजन को अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए पानी का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जेएलएन और भालौठ सब्र ब्रांच में कई दिन से पानी की सप्लाई बंद हैं। नहरें 30 मार्च तक आने की सम्भावनाएं हैं। जलघर खाली होने के कगार पर हैं। इसलिए सात दिनों तक पानी की भारी कमी देखने को मिलेगी। हालात ऐसे हैं कि कुछ ही कॉलोनियों में एक समय पानी की सप्लाई हो पा रही है। जिससे लोगों में गहरा रोष व्याप्त है। इसके अलावा लोगों को महंगे दामों पर पानी खरीद कर पीना पड़ रहा है।

30 मार्च के बाद ही सुधरेंगे हालात

पानी का दुरुपयोग न करें

नहरों में पानी नहीं है। जलघरों में कुछ दिन के लिए एक समय सप्लाई का पानी है। इसलिए आमजन को जागरूक किया जा रहा है कि वह होली पर पानी का दुरुपयोग न करें। 30 मार्च के बाद नहरों में पानी आएगा तो हालात सामान्य हो पाएंगे। जिन कॉलोनी में पानी पाइप लाइन से नहीं पहुंच पा रहा है। वहां टैंकर भेजकर पानी मुहैया करवाया जा रहा है। इसके अलावा कॉलोनियों में एक समय पानी सप्लाई की जा रही है। **-राजेश रोहिल्ला, एसडीओ, जन स्वास्थ्य विभाग**

पानी के टैंकर भेजे गए

पाड़ा मोहल्ला सहित आसपास के एरिया में पेयजल सप्लाई नहीं पहुंच पा रहा है। वहां से शिकायत मिलने पर जन स्वास्थ्य विभाग की तरफ से पानी के टैंकर भेजने की व्यवस्था की गई है। हालांकि अभी पर्याप्त संख्या में टैंकर मुहैया नहीं हो पा रहे हैं। जन स्वास्थ्य विभाग ने सिंचाई विभाग से संपर्क कर नहर में पानी भेजने की मांग की है लेकिन अभी तक पानी नहीं मिला है। जिससे हालात और खराब हो सकते हैं।

इन कॉलोनियों में किल्लत

लाढ़ौत रोड, बसंत विहार, शास्त्री नगर, सुखपुरा, राजेंद्रा कॉलोनी, उत्तम विहार, आजादगढ़, प्रेम नगर, दुर्गा कॉलोनी, सोनीपत स्टैंड, कैलाश कॉलोनी, दुर्गा कॉलोनी, तेज कॉलोनी, हनुमान कॉलोनी, काठमंडी, जनता कॉलोनी, आर्य नगर, चिन्योट कॉलोनी, श्रीनगर कॉलोनी, झज्जर रोड, सरकूलर रोड, माता दरवाजा, जींद रोड, सेक्टर एक, दो, तीन, चार में भी कई जगह एक ही समय पानी की सप्लाई आ रही है। जबकि कई कॉलोनियों में एक समय भी पानी नहीं आ रहा है।

पूर्व फौजी से 25 लाख रुपये ठगे, केस दर्ज

रोहतक। गांव टिटौली में पूर्व फौजी से धोखाधड़ी करके 25 लाख रुपये ठगी करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। पूर्व फौजी ने रिटायर्मेंट में मिले पैसों से काम शुरू करने का प्लान बनाया था, लेकिन उसके सहपाठी ने फ्लोर मील बेचने के नाम पर उसे ठगी का शिकार बना लिया। ठगी का उस समय पता लगा जब पूर्व फौजी के घर कोर्ट से सम्मन आए। टिटौली निवासी रोहताश ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह सेना से रिटायर्ड है। सेवानिवृत्त होकर आए तो रिटायर्मेंट के समय जो पैसे मिले, उससे कोई काम शुरू करने की सोची।

प्रदेश भाजपा कार्यालय में लोकसभा चुनाव को लेकर बनाई रणनीति

रोहतक। सेक्टर-36 स्थित प्रदेश भाजपा कार्यालय में लोकसभा चुनाव को लेकर संगठन महामंत्री फणिंद्रनाथ शर्मा और प्रदेश महामंत्री व राई से विधायक मोहन लाल बडोली ने बैठक ली। इस मौके पर जिलाध्यक्ष रणबीर सिंह ढाका, मेयर मनमोहन गोयल, वरिष्ट उप महापौर राजकमल सहगल, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष दीपक नागपाल, सुनील कत्याल चेयरमैन, जिला महामंत्री सुखबीर चंदेलिया, आशा शर्मा, डिप्टी मेयर अनिल कुमार, पार्षद प्रतिनिधि सूरज मल किलोई, पार्षद मनोज सैनी, पार्षद डॉक्टर गीता, नवनीत चेयरमैन, भोलू ब्लॉक समिति चेयरमैन, पार्षद डिंपल जैन, पार्षद राधेश्याम ढल, पार्षद कृष्ण कुमार, पार्षद तिलक राज, प्रशांत रंगी, मनोनित पार्षद आदेश जैन, मनोनित पार्षद अमित बंसल मौजूद रहे।

सुनारियां में फाइनेंसर की हत्या के मामले में पुलिस के हाथ खाली

रोहतक। गांव सुनारिया में फाइनेंसर की गोली मारकर हत्या मामले में दूसरे दिन भी पुलिस के हाथ खाली है। पुलिस टीम आरोपियों की तलाश में छापेमारी कर रही है। पुलिस की जांच के अनुसार हत्या आपसी रंजिश में की गई है। रविंद्र का पुलिस रिकार्ड हैं। उसके खिलाफ एक वर्ष 2020 में रोहतक के विजय नगर में चौटाला नामक युवक की हत्या का केस दर्ज है। केस में गिरफ्तार होने के बाद वर्ष 2021 में बेरी के काला और उसके दोस्तों ने सुनारिया जेल में रवींद्र पर हमला किया था।

श्री बाबा बालक पुरी हैप्पी वैली स्कूल में फूलों से खेली होली

रोहतक। श्री बाबा बालक पुरी हैप्पी वैली स्कूल में होली महोत्सव फूलों के साथ धूमधाम से मनाया गया। नर्सरी कक्षा से परीक्षित, मायरा, कर्तव्या, दिव्यांश, हनीश, युवान, मयंक, शौर्य ने होली नृत्य कर सभी दर्शकों का मन मोह लिया। श्री राधा नाम संग सुंदरकांड महिला मंडल ने अपने भजनों की प्रस्तुतियों से होली का समां बांध दिया। कार्यक्रम में सभी अभिभावकों को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन, वर्षा रानी पठानिया प्रिंसिपल पठानिया पब्लिक स्कूल, राजेश गुप्ता, कैलाश जैन ने बच्चों की प्रस्तुतियों, भजनों और फूलों की होली का आनंद लिया। उन्होंने भविष्य में बच्चों को धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। महामंडलेश्वर बाबा करण पुरी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बलिदान दिवस पर 10 किमी दौड़ का आयोजन

रोहतक। शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान दिवस पर रोहतक रनर्स ग्रुप द्वारा 10 किलोमीटर शहीद दिवस दौड़ का आयोजन किया गया। दौड़ की शुरुवात सुबह 6:30 बजे छोटू राम स्टेडियम से हुई और भिवानी स्टैंड पर शहीद भगत सिंह की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित कर दौड़ का समापन छोटू राम स्टेडियम में हुआ। इस दौड़ में रामफल फोगाट, चंदरपाल बनवाला, बिमला बनवाला, कुलवंत अहलावत, रणबीर मलिक, जितेंद हुड्डा, तुलसी लखेड़ा, बलराज, निशांत दहिया, अजय मलिक, रमेश हुड्डा और अरविंद पाल दहिया ने हिस्सा लिया।

गांव निंदाना युवक की हत्या के मामले में आरोपी गिरफ्तार

रोहतक। पुलिस ने गांव निंदाना निवासी युवक की गोली मारकर की गई हत्या की वारदात में आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया। सीआईए-2 प्रभारी आजाद नैन ने बताया कि 6 अप्रैल 2023 को निदांना निवासी मोहित की शिकायत के आधार पर थाना महम में केस दर्ज किया गया था। मोहित का भाई सुमित 6 अप्रैल 2023 को दोस्त के साथ बाइक पर घर की तरफ़ गली में आ रहा था।

रोहतक के दिलों पर छा गए कवि

हरिभूमि के 13वें कवि सम्मेलन में श्रोताओं ने जमकर लिया आनंद

दीप प्रज्ज्वलन से शुभारंभ

हरिभूमि के 13वें कवि सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरियाणा के कैबिनेट मंत्री डॉ. बनवारी लाल, कार्यक्रम अध्यक्ष राज्यसभा सासंद रामचंद्र जांगड़ा, विशिष्ट अतिथि एलपीएस बोसार्ड प्राइवेट लिमिटेड के एमडी राजेश जैन व मेयर रोहतक मनमोहन गोयल।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, कार्यक्रम अध्यक्ष एंव विशिष्ट अतिथियों को श्याम इंडस पॉवर सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर मेजर सत्यपाल सिंधु ने स्मृति चिह्न भेंट किए।

सदन का स्वागत करते एवं कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हरिभूमि के समाचार संपादक शंभू भद्र।

हरिभूमि के 13वें कवि सम्मेलन का आनंद लेते सीनियर डिप्टी मेयर रोहतक राजकमल सहगल, जिला बीजेपी अध्यक्ष रणबीर ढाका व पीजीआईएमएस रोहतक के डायरेक्टर डॉ.एसएस लोहचब।

हरिभूमि के 13वें कवि सम्मेलन का आनंद लेते नगर निगम रोहतक के ज्वाइंट कमिश्नर विजय सिंह।

कवि सम्मेलन में हास्य कविता का आनंद लेते श्रोता।

कवि सम्मेलन में पहुंचने पर मेयर मनमोहन गोयल का स्वागत करते हरि भूमि के सिटी कार्यालय प्रमुख मनोज वर्मा और डिस्ट्रिक्ट मार्केटिंग मैनेजर हरिओम वशिष्ठ।

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

गुदगुदाने वाले चुटकुले, हास्य और व्यंग्य, मां के प्रेम में डूबे गीत, श्रृंगार रस के मधुर शब्द, देशभक्ति से ओतप्रोत जोशीली कविताएं एक ही मंच पर श्रोताओं को इन सभी रसों के कवियों को सुनने का मौका मिला। पीजीआईएमएस के सुश्रुत ऑडिटोरियम में हरिभूमि का 13वां कवि सम्मेलन रोहतक के दिलों पर छाप छोड़ गया। दीपक सैनी ने मिमिक्री से खूब हंसाया, गौरी मिश्रा ने कान्हा के प्रेम भरे गीत गाए, प्रियांशु गजेंद्र ने अपने अंदाज में संदेश दिया। यही नहीं प्रसिद्ध कवि दिनेश रघुवंशी की मां पर लिखी कविता, सुदीप भोला की पिता-पुत्री पर लिखी मोबाइल वाली कविता और विनीत चौहान के राष्ट्रप्रेम के जोरदार शब्दों से पूरा ऑडिटोरियम 3 घंटे तक गूंजता रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री डॉ. बनवारी लाल रहे, जबकि अध्यक्षता राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने की, वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन मौजूद रहे। मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल, रामचंद्र जांगड़ा, राजेश जैन, मेयर मनमोहन गोयल, पीजीआईएमएस के डायरेक्टर डॉ. एसएस लोहचब समेत सभी अतिथियों और कवियों ने दीप प्रवज्लित करके सम्मेलन का शुभारंभ किया। सभी ने मां सरस्वती और आर्य समाज के पुरोधा चौधरी मित्र सेन आर्य के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। प्रियांशु गजेंद्र ने मां सरस्वती की वंदना की। कार्यक्रम में मंच संचालन आकाशवाणी के वरिष्ठ उद्घोषक संपूर्ण सिंह ने किया। इनके बाद कवियों की ओर से दिनेश रघुवंशी ने मंच संभाला। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

हंसाना आसान नहीं: डॉ. बनवारी लाल

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री डॉ. बनवारी लाल ने कहा कि मैंने इसी पीजीआईएमएस के कैंपस से 1982 में एमबीबीएस की डिग्री ली थी। आज यहां कवि सम्मेलन में आकर अच्छा लग रहा है। किसी को हंसाना आसान नहीं होता और हरि भूमि ऐसे आयोजन से लोगों के चेहरे पर हंसी लाने का काम करता है। डॉ. बनवारी लाल ने सभी को होली की बधाई दी।

सरोकारों से जुड़ा हरिभूमि: रामचंद्र जांगड़ा

सम्मेलन में सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने कहा कि चौधरी मित्रसेन सिंधु हमारे आदर्श हैं। उन्होंने समाज के हित के लिए जितने कार्य किए हैं, उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा। इसके साथ ही हरि भूमि भी सदैव सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यक्रम करवाता रहता है। उम्मीद है कि ये क्रम ऐसे ही जारी रहेगा।

रोहतक। पीजीआईएमएस के सुश्रुत ऑडिटोरियम में हरिभूमि द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में प्रस्तुति देते वीर रस के कवि विनीत चौहान।

रोहतक। हरिभूमि के 13वें कवि सम्मेलन का आनंद लेते शहरवासी।

इनका सहयोग रहा

- एलपीएस बोसार्ड प्राइवेट लिमिटेड, रोहतक,
- पठानिया पब्लिक स्कूल, इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक,
- जनता टीवी (टेलिविजन पार्टनर)
- कोटा क्लासिज,
- लोहचब मोटर कंपनी प्रा.लि., रोहतक
- लोहचब ऑटोकार प्रा.लि., रोहतक,
- रंश मोटर्स एवं निखार कैमिकल्स प्रा.लि., रोहतक
- पोजीट्रान हॉस्पिटल, रोहतक
- एच.डी. पब्लिक स्कूल,
- वेद मॉडल इंटरनेशनल स्कूल, कलानौर
- प्रेमसंस ज्वेलर्स, रोहतक
- पॉल एंड कंपनी, रोहतक
- दॉ आर्यन ग्लोबल स्कूल, रोहतक
- स्वामी नितानंद ग्रूप ऑफ स्कूल्स
- एमडीएन पब्लिक स्कूल, रोहतक
- जे.पी. इंटरनेशनल स्कूल, रोहतक
- कायनोस हॉस्पिटल, रोहतक
- जेड ग्लोबल स्कूल, रोहतक
- पंजाब नेशनल बैंक, रोहतक
- एलआईसी (भारतीय जीवन बीमा निगम), रोहतक
- होटल रिवोली, रोहतक
- केनरा बैंक, रोहतक
- यूपीएस लक्ष्मी, रोहतक
- बीपी जैन स्किल डेवलपमेंट सेंटर, रोहतक

केमिकल युक्त रंगों से बचें, हर्बल होली मनाएं: राजेश जैन

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन ने पर्यावरण संरक्षण और हर्बल होली का आह्वान किया। जैन ने कहा कि होली पर हानिकारक केमिकल युक्त रंगों से बचें। हर्बल और फूलों वाली होली खेलें। इसके साथ ही जैन ने चुनाव को लेकर युवाओं और सभी लोगों से अपील भी की है कि वे अपने वोट का प्रयोग जरूर करें।

श्रोताओं ने फेसबुक पर लाइव दिखाया

सम्मेलन में एक से बढ़कर एक कविता और चुटकुले प्रस्तुत किए गए। श्रोताओं ने अपने फेसबुक पर लाइव भी चलाया। इसके साथ ही भावुक और देशभक्ति की कविताओं पर श्रोताओं के कुर्सी से खड़े होकर तालियों से कवियों का हौसला बढ़ाया।

वीर रस कवि: विनीत चौहान

– किसका खून नहीं खोलेगा पढ़कर अखबारों में, शेरों की गर्दन कटवा दी कुत्तों के दरबारों में...
– चीन सीमा पर कहा... सीमा नहीं खिंचा करती है कागज की लकीरों से... ये धरती बढ़ती रहती है वीरों की शमशीरों से...
– लो एक परी जो चली गई वहसी, पापी हत्यारों से.. मैं शीश पटककर पूछ रहा क्या यही भाग्य है माटी काण... क्या दुनिया में संदेश गया इस जगत गुरु की माटी का...
– इसलिए निवेदन है मेरा दिल्ली के दरबारों से... अपने प्रांतों में बैठी हैं जो अलग-अलग सरकारों से, अब शीघ्र न्याय दो आंसू से उपजी सारी ललकारों को और लाल किले पर फांसी दे दो दुष्कर्मी हत्यारों को.. मैं सोच रहा हूं फांसी से क्या से कलंक धुल जाएगा...

गीतकार: दिनेश रघुवंशी

– हमारे वास्ते सपना सलोना बन गई अम्मा... जमीं पर लेटकर अक्सर बिछौना बन गई अम्मा...रुला देती है अब भी याद बचपन के मेलों की... खिलौना दे ना पाई तो खुद खिलौना बन गई अम्मा...
– बला मुझ तक तो नहीं आती उसे वो मोड़ देती है... मेरी चिंताओं के घेरों को पल में तोड़ देती है... भरी दुनिया में केवल मां...
– यू ही चलता रहे ये जिंदगानी का सफर भैया... कलाई सूनी मत रखना कभी त्योहार पर भैया... महकता ही रहे रिश्तों का से आंगन दुआ है।
– मेरे जोड़े हुए पैसे भले ना काम आए पर मेरे जोड़े हुए रिश्ते तो मेरे काम आएंगे, जो रिश्ते प्यार से सीचें वो काम आएंगे, मेरे जोड़े हुए पैसे भले ना काम आएं हों।

हास्य और व्यंग्य: सुदीप भोला

– ये गठबंधन का धागा, तुम जोड़ न पाए रागा, कान खोल के सुनें कांग्रेसी तुम्हारा वहां कोई नहीं है, दीदी ममता से बढ़ी हुई दूरियां, झाड़े वाले की हाय मजबूरियां। लालटेन बुझ गया रे मेरा हवा के झोंके से, हाय रे शाह ने लूट लिया रे धोखे से... – गुजरात में जबरदस्ती चुनाव प्रचार के लिए मुझे ले गए, एक पोस्टर लगाया पेट्रोल पंप पर, उस पर लिखा था अबकी बार 200 पार, एक लगाया सब्जी वाले की दुकान पर, उस पर लिखा था न खाऊंगा, न खाने दूंगा, एक आम आदमी के कार्यालय पर उस पोस्टर पर लिखा था आएगा तो मोदी ही। – कुर्सी की जो ये लड़ाई है, चचा न भाई है यहां-यहां, मौके पे चौका लगा दे जो वही खिलाड़ी है, देंगे सबकुछ तुमको मांगों हमसे ए बोले शाह-शाह, चौटाला-चौटाला दे दे समर्थन अभी-अभी।

पीजीआईएमएस रोहतक से एमएससी की टीम को सम्मानित करते मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री हरियाणा सरकार डॉ. बनवारी लाल।

पीजीआई में पढ़ने वाले छात्रों की मेडिकल सर्विस सेंटर (एमएससी) टीम को सम्मानित किया गया। इनकी खासियत है कि यह टीम तन-मन-धन से जरूरतमंदों की सेवा करती है। झुग्गी झोपिड़यों में गांवों में और ऐसी जगहों पर जहां से चिकित्सा सेवाएं दूर हैं, ऐसी जगहों पर ये टीम पहुंचती है और लोगों का इलाज करती है। टीम में रेजिडेंट डॉक्टर्स, एमबीबीएस, डेंटल, फामेर्सी, नर्सिंग और फिजियोथेरेपी के छात्र हैं। ये छात्र अपनी जेब खर्ची को बचाकर गरीबों और जरूरतमंदों के लिए दवाई लाते हैं। इन दवाओं को कैंप लगाकर बांटते भी हैं। 2016 में शुरू हुई इस मुहिम ने अब तक 3 हजार 500 से ज्यादा लोगों का इलाज किया है। इस मुहिम में पीजीआइर के प्रोफेसर्स और अधिकारी भरपूर मदद करते हैं। इस टीम के सेवाभाव को देखते हुए उन्हें सम्मान दि गया।

भूमिका दिव्यांगजन सेवा संस्थान की मंदीप व अन्य टीम को सम्मानित करते कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजेश जैन व मेयर रोहतक मनमोहन गोयल।

भूमिका दिव्यांगजन सेवा संस्थान चलाने वाले मंदीप और उनकी टीम 6 वर्षों से कलानौर में शिक्षा के क्षेत्र में व दिव्यांग बच्चों के उत्थान के लिए निशुल्क शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन कर रही है। टीम द्वारा किया जा रहा कार्य अपने आप में अनूठा है। विशेष बच्चों जिन्हें स्पेशल चाइल्ड कहते हैं, उन्हें निशुल्क शिक्षा दे रहे हैं। टीम के सदस्य अपने वेतन से रुपये बचाकर इन बच्चों की शिक्षा पर खर्च करते हैं। अब भी 45 से ज्यादा दिव्यांग बच्चों को निशुल्क पढ़ाया जा रहा है, उन्हें अलग-अलग तरह का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि वे समाज की मुख्यधारा से दूर महसूस न करें। संस्था द्वारा ही दिव्यांग बच्चों को नि:शुल्क पाठ्य पुस्तक सामग्री प्रतिवर्ष प्रदान की जाती है। उनके इस उत्कृष्ट कार्य को देखते हुए उन्हें मंच पर सम्मानित किया गया।

स्ट्रीट डॉग्स की सेवा करने वालीं करुणा को सम्मानित करतीं इंडस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यशनस की डायरेक्टर डॉ. एकता सिंधु व श्याम इंडस पॉवर सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के एमडी मेजर सत्यपाल सिंधु

मूल रूप से गांव बैंसी की रहने वाली करुणा जो फिलहाल सेक्टर-1 में रहती हैं उन्हें हरिभूमि के कवि सम्मेलन में शॉल और स्मृति चिह्न देकर सम्मनित किया गया। करुणा के कार्य के बारे में बात करें तो ये स्ट्रीट डॉग्स के लिए काम करती हैं। लगातार 20 साल से डॉग्स को खाना खिलाने, उनका इलाज करने का जिम्मा उठाए हुए हैं। करुणा सुबह 7 बजे अपने दोनों बच्चों एकलव्य और शोर्य के साथ सड़क पर निकलती हैं और शाम तक 100 से ज्यादा स्ट्रीट डॉग्स को खाना खिलाती हैं। यही नहीं आपकी स्कूटी चलती फिरती एंबुलैंस है। जहां भी घायल कुत्ता दिखता है, वहीं इलाज करती हैं। जिन डॉग्स को गंभीर इंजरी होती है, उनका गुरुग्राम में इलाज करवाती हैं। गांव बैंसी में कुत्तों के लिए शेल्टर बनाया है जहां अंधे, लंगड़े और ऐसे कुत्तों का सेवा करती हैं।

खेलों में योगदान के लिए छोटे सिंहपुरा के सरपंच जगबीर को सम्मानित करते डॉ.बनवारी लाल, रामचंद्र जांगड़ा व राजेश जैन।

गांव छोटे सिंहपुरा के सरपंच जगबीर को उनके खेलों में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। जगबीर 20 साल से गांव के बच्चों को कबड्डी का निशुल्क प्रशिक्षण दे रहे हैं। जगबीर और उनकी टीम द्वारा प्रशिक्षण लेकर 4-5 युवा सेना में खेल कोटे से भर्ती हुए, प्रो कबड्डी में भी जोर दिखा रहे हैं। बच्चों के लिए ड्रेस, जूते और अन्य सामान की व्यवस्था आप और आपकी टीम अपने ही रुपयों से करते हैं। इतना ही नहीं 10-15 बच्चे ऐसे भी हैं जिननी पढ़ाई का खर्चा भी आप उठाते हैं। यही नहीं हर साल हजारों पौधे लगाना, देखभाल करना, गांव के जलघर परर पक्षियों के लिए जगबीर और उनकी टीम ने घोंसले बना रखे हैं। कई मोर की जान उन्होंने बचाई है। हर घर पेड़ की मुहिम भी जगबीर ने चलाई हुई है।

खुशियां बांटते चलो संस्था की प्रियंका जैन, वसुंधरा और रेणू को सम्मानित करतीं इंडस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यशनस की डायरेक्टर डॉ. एकता सिंधु

खुशियां बांटते चलो संस्था की तीन पदाधिकारियों प्रियंका जैन, वसुंधरा और रेणू को भी हरिभूमि के कवि सम्मेलन में शॉल और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस संस्था का उद्देश्य है कि कोई भूखा न सोए। प्रियंका जैन की टीम में 40 सदस्य हैं। टीम के सदस्य खुद की जेब से रुपये इकट्ठा करते हैं, झुग्गी झोपड़ियों और जरूरतमंद लोगों के बीच जाते हैं, उन्हें भोजन उपलब्ध करवाते हैं। शादियों में जो भोजन बच जाता है, उस भोजन को भी आपकी टीम जरूरतमंदों तक पहुंचाती है। 2018 में यह अभियान शुरू किया गया था। ऐसे बच्चों को भी स्कूल में एडमियशन करवाते हैं, जिन्होंने या तो मजबूरी में स्कूल छोड़ दिया हो या दाखिला ही ना लिया हो। अब तक करीब 50 बच्चों का एडमिशन करवा चुके हैं।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर केनरा बैंक रोहतक के मंडल प्रबंधक बंसत कुमार दास को स्मृति चिह्न भेंट करते मुख्य अतिथि।

कवि सम्मेलन के बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के रिसर्च डायरेक्टर प्रो. (डॉ.) सुभाष चंद्र गुप्ता को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि।

ठहाके लगे तो कभी भावुक हुए श्रोता

देशभक्ति, शृंगार और प्रेम के गीतों से सराबोर हुआ सुश्रुत ऑडिटोरियम

हास्य कविः प्रियांशु गजेंद्र

– लिपट जाए तो हो जाए होली...जो पट जाए तो वो भी हो जाए होली, लिए रंग रपट जाए तो वो भी होली, जो रंग ना लगाकर लगाता है चूना, मनाता है वो लंदन में होली...
– लोग जहां रहते हैं मुंह छिपाकर... मैं उन्हीं गलियों में दर्पण बेचता हूं, नाग फनियों की गली में फूलों का व्यापार है मेरा
– खून के छींटे धरा से धो रहा हूं... बेसहारों का सहारा हो रहा हूं, तुम यहां बारूद की फसलें उगाते हो, मैं उन्हीं खेतों में मेहंदी बो रहा हूं...
– जैसे-तैसे उम्र बिता ली मैंने तेरे प्यार में, रात-2 भर तुमको गाया, सुबह छपके अखरर में आया... पांव बेचकर सफर खरीदे सफर बेचकर राहें... जब मैं खुद को बेच चुका तो सबकी पड़ी निगाहें...

शृंगार रसः गौरी मिश्रा

– न फूलों में न कलियों में न वो डाली में आती है, जो खुशबू मां के हाथों से सजी थाली में आती है... जो इक आवाज तो जो आती किसी मंदिर की घंटी से, वहीं आवाज हमें आपकी ताली में आती है।
– घुटन को छोड़ शहर की तुम्हारे गांव आई है, वहां पर दूर से चल करके नंगे पांव आई है, जो पहुंची हूं बुलंदी पे, परेशां हो रहे हैं सबण... जली हूं धूप में मुद्दतों तब जाकर छांव आई है..– आधी अधूरी हूं कान्हा बिना और मेरे बिना चित चोर है आधा, भीतर मोहन रूप सजाए तो, कृष्ण का रूप सधे नहीं साधा – जहां दुश्वार हैं राहें, वहीं आराम लिख दे, यू लगता है मोहब्बत का कोई पैगाम लिख दे, मैं अपना घर समझकरके चली आई, यूं ही तुम्हारे दिल के दरवाजे पे मेरा नाम लिखा है...

हास्य कविः दीपक सैनी

– अरविंद केजरीवाल, अमित शाह, राजनाथ सिंह, बाबा रामदेव, बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री, राहुल गांधी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मनोहर लाल खट्टर की मिमिक्री की।
– पूरी दुनिया में टेंशन हो सकती है, लेकिन दिल्ली वाले कभी टेंशन नहीं लेते, क्योंकि हमने टेंशन को ही मुख्यमंत्री बना रखा है, और ये टेंशन हरियाणा से ही दिल्ली गई है।
– अरविंद केजरीवाल कहते हैं कि दिल्ली पुलिस मुझे दे दो, फिर मैं देख लूंगा, मैंने कहा, दिल्ली पुलिस भी यही कह रही है।
– दिल्ली में मुश्किल से डेंगू भगाया। पोस्टर छपवाया और लिखा कि डेंगू का मच्छर साफ पानी में भी पनप सकता है, पोस्टर में नीचे केजरीवाल का फोटो।

सहयोगियों का सम्मान

13वें कवि सम्मेलन के को-स्पॉन्सर पठानिया पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर अशुंल व वर्षा पठानिया को स्मृति चिह्न देते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदेश के कैबिनेट मंत्री डॉ. बनवारी लाल व कार्यक्रम अध्यक्ष राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा।

कवि सम्मेलन के को-स्पॉन्सर इंडस ग्रुप ऑफ स्कूल की प्रिंसिपल सुषमा झा को स्मृति चिह्न देते मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल व रामचंद्र जांगड़ा, साथ हैं इंडस ग्रुप की इस्टीट्यशनस की डायरेक्टर डॉ. एकता सिंधु।

कवि सम्मेलन के मीडिया पार्टनर जनता टीवी के प्रतिनिधि संजय को स्मृति चिह्न देते मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल व कार्यक्रम अध्यक्ष रामचंद्र जांगड़ा साथ हैं रोहतक नगर निगम के मेयर मनमोहन गोयल।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर कोटा क्लासिज के डायरेक्टर संदीप कुमार व फैकल्टी मेंबर को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर लोहचब मोटर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड के डीईएम विशेष मलिक को स्मृति चिह्न देते मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर लोहचब ऑटोकार प्राइवेट लिमिटेड के एसआरएम अंकित भांखर को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बनवारी लाल व राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर रंश मोटर्स एंवम निखार केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड के सीएमडी राजेंद्र बंसल को स्मृति चिह्न भेंट करते मुख्य अतिथि।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर एचडी स्कूल के कोर्डिनेटर सचिन रापड़िया को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बनवारी लाल व साथ मौजूद एलपीएस बोसार्ड के डायरेक्टर राजेश जैन।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर वेद मॉडल इंटरनेशनल स्कूल कलानौर के कोर्डिनेटर मुकेश गोयल को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर प्रेमसंस ज्वेलर्स के प्रोपराइटर विपुल आहूजा को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बनवारी लाल व साथ मौजूद कार्यक्रम अध्यक्ष रामचंद्र जांगड़ा।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर पॉल एंड कंपनी के डायरेक्टर हरीश कुमार भूटानी को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर दॉ आर्यन ग्लोबल स्कूल के प्रिंसिपल आरके खन्ना को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल व कार्यक्रम अध्यक्ष रामचंद्र जांगड़ा।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर स्वामी नितानंद ग्रुप ऑफ स्कूल्स के प्रतिनिधि मनोज गहलावत को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बनवारी लाल, साथ हैं एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर एमडीएन पब्लिक स्कूल के प्रशासनिक निदेशक कृष्ण कुमार को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बनवारी लाल साथ हैं कार्यक्रम अध्यक्ष रामचंद्र जांगड़ा।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर जेपी इंटरनेशल स्कूल के चेयरमैन राजीव मलिक को स्मृति चिह्न भेंट करते कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बनवारी लाल, साथ हैं एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर कायनोस हॉस्पिटल के चेयरमैन रामफल दहिया को स्मृति चिह्न भेंट करते मुख्य अतिथि डॉ. बनवारी लाल ,साथ हैं विशिष्ट अतिथि एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर जेड ग्लोबल स्कूल के मीडिया प्रभारी राजीव जैन को स्मृति चिह्न भेंट करते मुख्य अतिथि मंत्री डॉ.बनवारी लाल, साथ हैं कार्यक्रम अध्यक्ष रामचंद्र जांगड़ा, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजेश जैन व मेयर मनमोहन गोयल।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर भारतीय जीवन बीमा निगम के प्रशासनिक अधिकारी दीवान शर्मा को स्मृति चिह्न भेंट करते मुख्य अतिथि।

कवि सम्मेलन के एसोसिएट स्पॉन्सर रिवोली होटल के मैनेजर रामप्रकाश सैनी को स्मृति चिह्न भेंट करते हरियाणा के कैबिनेट मंत्री डॉ.बनवारी लाल, साथ हैं राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा।

खबर संक्षेप

शिविर में 144 लोगों ने किया रक्तदान

रोहतक। शहीदी दिवस पर हम और आप सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा रक्तदान शिविर छोटू राम धर्मशाला पर लगाया गया, जिसमें 144 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। संस्था के सरपरस्त गुलशन निझावन ने बताया कि ये इससे पहले भी संस्था द्वारा समय-समय पर रक्तदान, स्वच्छता, नेत्रदान, बर्तन बैंक की मुहिम निरंतर चलाई जा रही है। संस्था का उद्देश्य मानव व समाज में भलाई करना है। कथा वाचक केशव कृष्णा ने 25वीं बार रक्तदान किया।

मायना में राजपाल सिंह की याद में प्रतियोगिता

रोहतक। गांव मायना में राजपाल सिंह की याद में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में महिलाओं, बुजुर्गों व बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में 12 वर्षीय लड़कों में 800 मीटर रेस में योगेश प्रथम, प्रतीक द्वितीय व सन्नी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं, 16 वर्षीय लड़कों 1200 मीटर में मंगराज प्रथम, वंस द्वितीय व जतिन तृतीय रहा। 12 वर्षीय लड़कियों में 800 मीटर में अवनी सुनारिया प्रथम रही।

नया बांस के पास बेटे के सामने पिता को कैंटर ने कुचला, मौत

बाप-बेटा गए थे सैर के लिए, पिता बाइक में तेल डलवाने लगे तो हो गया हादसा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सांपला

■ पिता बाइक को लेकर भैसरू खुर्द की तरफ चले तो सांपला की तरफ से आ रहे कैंटर चालक ने मार दी टक्कर

कस्बे के गांव नया बांस के पास बाइक सवार किसान को उसके बेटे के सामने कैंटर ने कुचल दिया। हादसा उस समय हुआ जब बाप-बेटा सैर के लिए गए हुए थे और पिता बाइक में तेल डलवाने के लिए जा रहा था। तभी सांपला की तरफ से आ रहे कैंटर ने टक्कर मार दी। इस हादसे में बाइक सवार पिता की मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन शुरू कर दी।

गांव नयाबांस निवासी शिवम ने सांपला थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया वह पढ़ाई करता है। वह 23 मार्च की सुबह करीब 5 बजे अपने पिता संजीत के साथ बाइक पर नयाबांस स्थित बाइपास की तरफ सैर करने गए थे। इस दौरान बाइक को एक साइड में खड़ा कर दिया। फिर वे नया बांस से गिझी रोड की तरफ पैदल सैर करने के लिए चले गए। कुछ देर बाद वे सैर करके वापस आ गए। शिवम ने बताया कि इस दौरान उसने अपने पिता को कहा कि वे बाइक में तेल डलवा कर ले आएं। जब उसके पिता बाइक को लेकर भैसरु खुर्द की तरफ चले तो सांपला की तरफ से आ रहे कैंटर चालक ने बाइक को सीधी टक्कर मार दी। जिसकी वजह से उसके पिता को गहरी चोटें आई और उनकी मौत हो गई।

कैंटर चालक फरार

हादसे के बाद कैंटर चालक अपनी गाड़ी को छोड़कर फरार हो गया। जिसके बाद मामले की शिकायत पुलिस को दे दी। जांच अधिकारी नवीन कुमार ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। मामले की जांच की जा रही है।

सैनीपुरा में फंदे पर लटकी विवाहिता, मामला दर्ज

रोहतक। घरेलू कलह से परेशान होकर सैनीपुरा निवासी महिला ने फंदा लगाकर जान दे दी। ससुरालजनों को जैसे ही पता चला, उन्होंने पुलिस को सूचित किया। सूचना पाकर पुलिस व एफएसएल की इंचार्ज डॉ. सरोज दहिया मौके पर पहुंची और शव को फंदे से नीचे उतारकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए पीजीआई के शवगृह में रखवा दिया। आत्महत्या करने का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं है, लेकिन इसके पीछे घरेलू कलह ही बताई जा रही है। पुलिस मायके पक्ष के बयान पर केस दर्ज कर जांच शुरू करेगी। पुरानी सब्जी मंडी थाना प्रभारी सुनील कुमार ने बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि सैनीपुरा में एक महिला ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली है। प्राथमिक जांच में सामने आया कि पति पत्नी के बीच शनिवार को किसी बात को लेकर आपस में कहासुनी हो गई थी। इसी बीच महिला ने फांसी लगा ली। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को नीचे उतारा और मृतका के मायके पक्ष को सूचित किया।

4 साल पहले हुआ था विवाह, डेढ साल का बेटा

जानकारी अनुसार सैनीपुरा निवासी युवक के साथ सिरसा के डबवाली की रहने वाली ज्योति का विवाह करीब चार साल पहले हुआ था। उनका करीब डेढ साल का एक बेटा भी है। अक्सर पति पत्नी के बीच कहासुनी होती थी।

विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर किया सम्मानित

रोहतक। एमएस सरस्वती सीनियर सेकेंडरी स्कूल में वार्षिक परीक्षा परिणाम, पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को ट्रॉफी व एक-एक पौधा देकर सम्मानित किया गया। उसके साथ ही कक्षा में प्रथम 10 स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को भी पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। विद्यालय के निदेशक हिमांक मित्तल और प्रधानाचार्य रितु ने सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया।

विकल्प पब्लिक स्कूल में मनाया होली उत्सव

रोहतक। विकल्प पब्लिक स्कूल में होली का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। परीक्षा समाप्त होने के बाद सभी कक्षा अध्यापिकाओं ने विद्यार्थियों को तिलक लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। बच्चों ने भी शिक्षको को रंग लगाया। सभी अध्यापको ने भी रंगों के इस उत्सव का भरपूर आनंद उठाया। सभी ने एक-दूसरे को रंग लगाकर व मिठाई खिलाकर होली की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधन कमेटी के निदेशक सुखबीर सिंह, सहायक निदेशिका किरन खुराना, कोर्डिनेटर मंजु सहित अन्य उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी सम्मानित

कलानौर। डीएवी पब्लिक स्कूल कलानौर के प्रधानाचार्य डॉ. विजयपाल व अन्य अध्यापकों ने खेलों के क्षेत्र में प्रतिभा दिखाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया। डॉ. विजयपाल ने बताया कि जो विद्यार्थी डीएवी नेशनल स्पोर्ट्स में अपना बेहतर प्रदर्शन करेंगे उन्हें न केवल एसजीएफआई बल्कि उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय में 3 से 5 प्रतिशत तक के अंकों का अतिरिक्त लाभ भी मिलेगा। सभी खिलाड़ियों और उनके अभिभावकों ने प्रधानाचार्य का आभार व्यक्त किया।

जॉन वेस्ले कॉन्वेंट स्कूल में होली उत्सव मनाया

रोहतक। गोहाना रोड स्थित जॉन वेस्ले कॉन्वेंट स्कूल में होली उत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। बच्चों को भारतीय संस्कृति में होली त्यौहार की चेतना, ईश्वर की अपरंपार महिमा, होली दहन, धुलेंडी व मौसम परिवर्तन के बारे में बताया। सभी ने एक दूसरे को होली की शुभकामनाएं दी, मिठाई खिलाई व उत्सव का भरपूर आनंद लिया। प्रधानाचार्या डॉ. ममता मलिक ने कहा कि होली हमारे जीवन में उल्लास में आनंद का सचांर करने वाला त्यौहार है। इस अवसर पर विद्यालय उप-प्रधानाचार्या मशेंका, किरण चावला, रुचि, हर्ष, विन्नी, रितु खुराना, सीमा, दीपमाला आदि मौजूद रहे।

रिटौली के स्कूल में मनाया होली मिलन समारोह

रोहतक। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रिटौली में नई शुरूआत संस्था द्वारा शहीदी दिवस व होली मिलन समारोह मनाया गया। सभी ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी और शहीद ए आजम भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव के चित्रों पर माल्यार्पण किया। वहीं इस दौरान पूर्व छात्र मिलन समारोह भी आयोजित किया गया और पूर्व छात्रों को भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मातनहेल विजय बाला अहलावत, प्राचार्य सुरेश दहिया, अग्रेजी प्रवक्ता सुरेखा, गणित प्रवक्ता धर्मेंद्र दला, दलजीत सिंह, रणजीत सिंह, अर्थशास्त्र प्रवक्ता राजबीर सिंह, पीटीआई सुनील को भी सम्मानित किया गया।

शेयरिंग हैप्पीनेस ग्रुप ने होली मिलन समारोह मनाया

रोहतक। शेयरिंग हैप्पीनेस ग्रुप ने मातूराम कम्युनिटी सेंटर में होली के रंग घूमर के संग होली मिलन समारोह का आयोजन किया। समारोह में रंगारंग कार्यक्रम तथा प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। महिलाओं और बच्चों ने पुरस्कार जीते। तंबोला, स्माइल कॉन्टैस्ट आदि प्रतियोगिओं का सभी ने खूब लुत्फ उठाया। स्कूल प्रबंधक ने सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को होली पर्व की शुभकामनाएं दी और पानी रहित होली मनाने के लिए प्रेरित किया।

जमकर थिरके सब्जी मंडी के आढ़ती गुलाल लगा कर दी होली की बधाई

रोहतक। नई फल एवं सब्जी मंडी में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। हर हर महादेव सेवा समिति की तरफ से लगातार दूसरे वर्ष आयोजित किए गए इस समारोह में सभी आढ़तियों ने गुलाल लगाकर एक दूसरे को होली की बधाई दी और धार्मिक गानों पर जमकर नृत्य किया। समिति के सदस्य गौरव चुघ ने बताया कि इस मौके पर बहुत ही सुंदर महादेव की झांकियां निकाली गई और अटूट भंडारे का भी आयोजन किया गया।

उन्होंने कहा कि उनके सभी युवा साथी बढ़-चढ़कर हमेशा ही धार्मिक, सामाजिक और जन कल्याण के कार्यों में अग्रणी भूमिका में रहते हैं। हन्नी पुनयानी ने हर हर महादेव और जय श्री राम के नारों से समां बांध दिया। मंडी महासचिव साहिल मग्गू ने सभी शहर वासियों और प्रदेशवासियों को होली की शुभकामनाएं दी और कहा कि इसी तरह हमारे प्रदेश में 36 बिरादरी का भाईचारा मजबूत हो और होली के रंगों की तरह सबकी जिंदगियां खुशियों से भर जाएं। इस मौके पर तरुण कथूरिया, बाबा, पवन, विक्की, कन्नू, कपिल, सोनू कत्याल, नरेश, सचिन छोकरा, गोलू आदि मौजूद रहे।

पठानिया स्कूल में नए शैक्षणिक सत्र की शुरूआत पर कार्यक्रम

■ नवीन प्रवेश प्राप्त विद्यार्थयों के लिए पैरेंट ओरिएंटेशन प्रोगाम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गोहाना रोड स्थित पठानिया पब्लिक स्कूल में नए शैक्षणिक सत्र की शुरूआत में कक्षा नर्सरी से बारहवीं के विद्यार्थियों के नए बैच के स्वागत के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। प्रोग्राम में लगभग 400 से अधिक विद्यार्थियों और उनके अभिभावकगण ने शिरकत किया। सर्वप्रथम मां भारती के सक्षम विद्यालय निदेशक अंशुल पठानिया, को-फाउंडर वर्षा पठानिया, प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया, उप-प्रधानाचार्या प्रीति ढांडा व सुनीता मोर, हेड मिस्ट्रस सुमन राठी ने दीप प्रज्जवलित कर उनका आह्वान किया। कार्यक्रम का मंच संचालन कनिका मग्गु, प्रभा शर्मा, रजनी गुलाटी व सोनम गुप्ता ने किया। कार्यक्रम के अंत में उन्हें क्लास रूम, कम्प्यूटर लैब, रोबोटिक्स, स्विमिंग पुल, लाइब्रेरी व प्ले ग्राउण्ड आदि का भ्रमण करवाया गया। विद्यालय निदेशक अंशुल पठानिया ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में स्कूल का प्रमुख योगदान होता है।

संत गरीब दास स्कूल करौंथा में मनाया होली पर्व

रोहतक। गांव करौंथा में शनिवार को संत गरीब दास मैमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में होली पर्व का आयोजन किया गया। यह जानकारी प्राचार्या संगीता ने दी। उन्होंने बताया कि बच्चों और अध्यापकों ने बड़े उत्साह के साथ एक दूसरे को रंग-गुलाल लगाकर शभकामनाएं दी। उन्होंने बच्चों को रंगों के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि होली का पर्व अपने पुराने गिले सिकवे भुलाकर एक दूसरे को गले लगाने और आपसी भाईचार बढ़ाना का संदेश देता है। हमें किसी के प्रति वैरभाव नहीं रखना चाहिए। अध्यापकों ने कहा कि होली पर कैमिकल युक्त रंगों के प्रयोग से दूरे रहें। इस मौके पर हर्बल गुलाल लगाकर रंगों के त्योहार होली को मनाएं। इस मौके पर ममता, सोनिया, दीपा आदि मौजूद रही।

मन का स्थिर होना बहुत जरूरी : श्रुत सागर

रोहतक। सेक्टर एक स्थित श्री पारसनाथ दिगंबर जैन गजरथ मंदिर में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ में श्रद्धालुओं ने बढ़चढ़ भाग लिया और विशेष पूजा अर्चना की। श्रुत सागर महाराज ने कहा कि शब्दों में बड़ी शक्ति होती है। श्रुत सागर महाराज ने कहा कि अगर मन स्थिर नहीं होगा तो कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होगा। साथ ही मूलआकार मां है और अगर वह नहीं है तो दुनिया में कोई नहीं है। ब्रहमा पर भी जगती जननी भारी है। उन्होंने कहा कि प्राण वायु, अपान वायु, व्यान आयु, समान आयु और उदान आयु से हमारा शरीर चलता है। शुद्ध भोजन करने से मन, वचन व काया शुद्ध रहती है। श्रुत महाराज ने कहा कि भोजन करने के बाद ब्रज आसन बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि स्वयं जागो तो विश्व जागेगा और स्वस्थ रहोगे तो विश्व स्वस्थ रहेगा। इस अवसर पर विजय जैन, राजेश जैन, सिद्धार्थ जैन, बलजीत राय जैन, अश्विनी जैन, आरके जैन, रीटा जैन, संध्या जैन, दीपा जैन, स्मृद्धि जैन, मधु जैन, उमा शर्मा, गौतम जैन, शलैन्द्र जैन, राजीव जैन आदि मौजूद रहे।

मोदी का दिल धड़कता है आम आदमी के लिए : ढाका

रोहतक। मोदी का दिल देशवासियों के लिए ही धड़कता है। हम सब ही उनका परिवार हैं। यह विचार शहीदी दिवस पर गांव भाली आनंदपुर के बूथ न. 27,28 पर जनसम्पर्क के दौरान जिलाध्यक्ष एडवोकेट रणवीर ढाका ने व्यक्त किए। उन्होंने ग्रामीणों से संवाद करते हुए कहा कि मिल रही सुविधाएं नरेंद्र मोदी की देन हैं। उन्होंने जीवन में आम आदमी की तकलीफों को नजदीक से देखा है और दो-दो हाथ भी किए हैं। गरीबी के दिनों में जो कष्ट उन्होंने सहे हैं,मोदी चाहते हैं किसी अन्य देशवासी को न सहने पड़ें। उनके कारण ही आज 80 करोड़ जरूरतमंद देशवासी मुफ्त राशन योजना का लाभ ले रहे हैं। देश का छौटे किसान को सम्मान निधि के माध्यम से सम्मानित किया गया है। सम्पर्क अभियान के दौरान उपस्थित जिला उपाध्यक्ष हरिओम मित्तल भाली ने कहा कि भारत का प्रत्येक परिवार मोदी का परिवार है। मोदी की भारत भक्ति की प्रशंसा करते हुए मित्तल ने कहा कि भूटान में मिले सर्वोच्च सम्मान को देशवासियों को समर्पित करते हुए मोदी ने कहा कि यह मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि नही है बल्कि मेरे 140 करोड़ देशवासियों का सम्मान है।

इंडस स्कूल की जूनियर ब्रांच में पारितोषिक वितरण और होली मिलन समारोह मनाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक। पारितोषिक वितरण समारोह में अपनी प्रस्तुति देते हविद्यार्थी।

रोहतक। पारितोषिक वितरण समारोह में विद्यार्थी को सम्मानित करतीं विद्यालय की चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु। फोटो : हरिभूमि

इंडस पब्लिक स्कूल की जूनियर ब्रांच में शनिवार को पारितोषिक वितरण और होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु व विद्यालय की डायरेक्टर प्राचार्या डॉ. सुषमा झा ने द्वीप प्रज्जवलन के साथ किया।

इस अवसर पर सभी अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया। नन्हें मुन्नों की मंत्रमुग्ध प्रस्तुति ने वातावरण को रंगमय बना दिया। रंग-बिरंगे परिधानों में सतरंगी छटा ने होली मिलन में चार चांद लगा दिए। इस समारोह सर्वाधिक अंकों से पास होने वाले विद्यार्थियों को खेल प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतने वाले, अतिआत्मविश्वासी ओवर ऑल प्रवीण, व्यवहार कुशलता में उत्तम छात्रों को पुरस्कृत किया गया। विद्यार्थियों ने भारतीय संस्कृति में होली के प्रतीक रंगों की छटा को अपने हुनर द्वारा बखूबी दर्शाया। विद्यालय की चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु ने कहा कि पारितोषिक वितरण शैक्षणिक सत्र के दौरान बहु-आयामी गतिविधियों में प्राप्त उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने का अवसर रहता है। इस आयोजन से छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना के साथ बेहतर प्रदर्शन का प्रोत्साहन भी मिलता है। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की चेयरपर्सन व प्रधानाचार्या ने सभी अभिभावकों का आभार व्यक्त कर होली की शुभकामनाएं दी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो वह निम्न टेलीफोन नम्बरों पर कार्यालय समय पर सूचित करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

TOP-IN-TOWN रोहतक बाजार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें: विज्ञापन विभाग, हरिभूमि कार्यालय, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
मो. 9996959400, 9996985800, 9996965600, 9996954600

सैक्स समस्याएं
MOST TRUSTED SEXOLOGIST AWARDEE
BHGYASHREE Bollywood Actors
DR. KAWATRA M. 9215161430
निःसंतान दम्पत्तियों
को शादी के सालों साल बाद जब हमारे ईलाज से उन दम्पत्तियों को संतान सुख प्राप्त हुआ, उन लाभार्थ दम्पत्तियों के नाम व पते हमारे पास सुरक्षित हैं।
पुल पार, हिसार रोड, रोहतक 9215161430

मानसरोवर हॉस्पिटल
REQUIRES
COMPUTER OPERATOR 4
ACCOUNTANT 1
RECEPTIONIST 2
SWEEPER 2
नजदीक पी.एन.बी. बैंक, विकास नगर के सामने, सोनीपत रोड, रोहतक
Tel.:- +91-1262-253500 Mobile: 9254302848, 9053005599

JOIN CRASH/1YEAR COURSE
CUET
SCIENCE I HUMANITIES I COMMERCE I APTITUDE
IPM (5 Years MBA)
IIM Rohtak, Indore, Jammu, Ranchi, Bodhgaya
T.I.M.E. Triumphant Institute of Management Education Pvt. Ltd.
D-Park, Delhi Road Rohtak 9215598698

बवासीर व पुरुष समस्या विशेषज्ञ
98123-13648
शादी से घबराहट जोश व टाईम बढ़ाएं
उम्र की अधिकता या अन्य कारण से आई शारीरिक कमजोरी, निःसंतान मिलें
जब कहीं न आए आराम, हम करेंगे समाधान
Super Specialist नकलचियों से बचें
डॉ. मोहित जुनेजा
M.D. Ayurved (UK)
रोहतक: दिल्ली रोड, राज सिनेमा साथ, बैसमेंट के अंदर।

haribhoomi.com
हरिभूमि
रविवार भारती
रंगोत्सव विशेष
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार, 24 मार्च 2024

तन रंग लें-मन रंग लें
जीवन सतरंगी कर लें

जीवन में अगर रंग न हों तो सब कितना बेरंग-नीरस लगेगा। जीवन में रंगों की महत्ता को रेखांकित करने के लिए ही हमारे देश-समाज में पौराणिक काल से ही रंग पर्व मनाने की परंपरा चली आ रही है। यह पर्व हमें प्रेम, स्नेह और अपनेपन के रंग में रंग देता है। जीवन को सतरंगी बनाता है।

पर्व-निहितार्थ / डॉ. मोनिका शर्मा

रंग सदा जीवन के संग चलते हैं। अवसरों के अनुसार विशेष छटा के साथ बिखरते हैं। कभी रंगों की चटक, उसकी आभा मन में उत्साह भरती है तो कभी फीकापन सुकून देता है। मन-जीवन की हर निखार-संवार में रंग अपनी उपस्थिति रखते हैं। उम्र के हर पड़ाव पर अपनी आभा संग ये रंग अलग-अलग अनुभूतियों से मिलवाते हैं। रिश्तों के हर मोड़ पर विशेष ढंग से मन को प्रभावित करते हैं। होली, रंगों की यही छटा हर ओर बिखरने का पर्व है। इस सतरंगी उत्सव पर जीवन से जुड़े रंग और रंगों में रचा-बसा जीवन का ताना-बाना स्मरण हो आता है। कुछ बीते हुए पल और थोड़ी-सी आज की हलचल, सतरंगी आभा से जीवन को सजा देती है।

बरकरार है नेह का भाव-चाव

हर औपचारिकता से परे यह पर्व लोगों को साथ और स्नेह की डोर से बांधता है। उड़ते गुलाल और फगुनाहट की धुन में बदला हाल-चाल भारतीय जनमानस को एक-दूजे से जोड़ता रहा है। नेह के भाव-चाव का यह उत्सव रिश्तों पर रीझने का प्यारा अवसर होता है। लोकगीतों में ध्वनित होते जमीनी जुड़ाव की धुन सुनने-सुनाने का मौका बन जाता है। भारत की पावन धरा पर तो ईश्वरीय अवतारों ने भी उत्सव की इस रंगीन छटा को आम मनुष्यों के समान ही जीया है। पौराणिक कथाएं, हमारे आराध्य भगवान कृष्ण, शिव और भगवान राम सभी के होली खेलने का वर्णन लिए हैं। ब्रजभूमि पर राधा-कृष्ण और गोपियों की ठिठोली के संग होली खेलने और काशी के मणिकर्णिका घाट पर शिवजी के श्मशान में होली खेलने की बात भी शामिल है। वहीं अवध में प्रभु राम और सीता माता के होली खेलने का भी उल्लेख है। सोचिए कि वृंदावन में गोपियों ने अपनी झोली से कृष्ण पर अबीर उड़ेल कर हंसते-खिलखिलाते हुए कितने नेह संग कहा होगा, *'लला फिर आइयो खेलन होरी।'*

या राग-रंग में घुला यह भाव देखिए

ए केकरे हाथ कनक पिचकारी ए केकरे हाथे अबीरा/
अवध में होली खेले रघुबीरा।

नेह के इसी भाव-चाव को तब से अब तक भारत का जनमानस हर वर्ष जीवंत भाव संग जीता है।

साझी संस्कृति का उत्सव

होली का पर्व, हर उम्र के लोगों के लिए उत्सवीय धुन की आहट की तरह होता है। खान-पान से लेकर मस्ती और मेल-जोल तक। बच्चे-बड़े, महिला, पुरुष सब इस साझे सुख को जीते हैं। ठंडाई, गुझिया, खीर, पूड़ी, कचौड़ी और दही-बड़े का स्वाद अपनी रसोई की ओर ले जाता है तो गुलाल उड़ाने की मस्ती आंगन में खींच लाती है। रिश्तों पर रीझने और अंजान लोगों को भी रंग डालने की रीत का मानवीय मेल इसे साझी संस्कृति का पर्व बनाता है। झांझ-मंजीरे और ढोलक की थाप के साथ गूंजते स्थानीय गीतों से इस पर्व पर लोक का स्वर मुखर होता है। हंसाने-हंसाने नाचने-गाने की एक अनगढ़ थिरकन मन मोहती है। होली पर ब्रजभूमि की गोपियां भी याद आती हैं और राधा-कृष्ण भी। होली पर अबीर उड़ाते रघुवीर भी स्मरण हो आते हैं। गहरे रंगों से रंगे-पुते चेहरों का आपसी मेल-जोल मानवीय संवेदनाओं को उजला बनाता है। आदिम उल्लास का यह पर्व असल में आत्मीय जुड़ाव की अनौपचारिक खनक साथ लाता है। गांव की चौपाल से जुड़ी स्मृतियां आज महानगरों में बसी बड़ी हुई पीढ़ी के मन में दस्तक देने लगती हैं।

परंपरा की अनौपचारिक खनक

देश के हर हिस्से में फाग की मस्ती और हंसी-ठिठोली विशेष रंग लिए होती है। यह धमक मन की थिरकन है। कहीं कृष्ण भक्ति के रस में डूबे लोग तो कहीं अपने आराध्य के चरणों में गुलाल लगाने की परंपरा। कहीं कानों से टकराती चंग की थाप की मादकता तो कहीं टपकता महुआ। एक तरफ खेतों में पकती गेहूं की बालियां तो दूसरी तरफ बौर से लदकर झुक आए आमों के पेड़। पूरी प्रकृति इस उत्सवीय छटा को जीती नजर आती है। वहीं होली के इस पर्व पर इंसानों के भाव-चाव भी बहुत मुखर होते हैं। कहीं कोई औपचारिकता नहीं। दिखता है तो बस अपनेपन से भरा राग-रंग और सामुदायिक जुड़ाव की धुन। तभी तो होली आध्यात्मिक-सामाजिक भावों से जुड़ी खुशियों को जीते हुए उदारता और सहिष्णुता सिखाने वाला उत्सव है। हर उम्र, हर समुदाय के लोगों को ऊर्जावान और जीवंत बने रहने का संदेश देता है। इसीलिए तो जीवन को सरस-सुंदर बनाने वाला यह रंगपर्व, भारतीय संस्कृति की सबसे प्यारी उत्सवीय परंपराओं में से एक है।

तो आइए इस रंगोत्सव पर एक बार फिर हम सब प्रेम और अपनेपन के रंगों से एक-दूसरे को सराबोर कर लें, जीवन को इंद्रधनुषी रंगों से सजा लें। *

होली के दोहे / डॉ. शरद नारायण खरे

रंगों के संग खेलती, एक नवल-सी आस।
मन में पलने लग गया, फिर नेहिल विश्वास।।
कुंजन, क्यारिन रौनकें, अवसादों का अंत।
अनुरागी की बात क्या, तोड़ रहे तप संत।।
बौराया-सा लग रहा, देखो तो मधुमास।
प्रीति-प्रणय के भाव का, है हर दिल में वास।।
भली लगे शीतल हवा, मौसम के प्रतिमान।
अधरों पर पलने लगा, ढाई आखर गान।।
करते मंगलकामना, आकर रंग-अबीर।
वे भी चंचल हो गए, जो थे नित गंभीर।।

सुदृढ़ नहीं रह पाए नहीं, अनुशासन के बंध।
अभिसारों ने है रची, चोखी-नई सुगंध।।
फागुन की अठखेलियां, नयनों की है मार।
बदला-बदला लग रहा, देखो यह संसार।।
कदम-कदम से मिल रहे, हाथ गह रहे हाथ।
पर्वों को तो मिल रहा, धर्म,नीति का साथ।।

उल्लासोत्सव / कुमार राधारमण

होली के पर्व में कुछ ऐसी विशिष्टताएं हैं, जो इसे सबसे विलक्षण बनाती हैं। पूरे देश में अलग-अलग रूपों में मनाया जाने वाला यह पर्व हम सभी के जीवन में बहुत मायने रखता है।

उत्तराखंड के कुमाऊं में होली

रंग-उमंग-तरंग समेटे
विलक्षण पर्व होली

जीवन के हजार रंग हैं। हमारे पर्व-त्योहार इन्हीं रंगीनियों को बनाए रखने के लिए हैं। तमाम रंगों में एक रंग ऐसा है, जिसमें सामूहिकता का बोध निहित है, और वह रंग है होली का। जीवन में जो भी उत्सव और उल्लास है, केवल वर्तमान के क्षण में ही है। हमारे सारे पर्व-त्योहार हमें वर्तमान में जीने का ही प्रयास हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हम एक उत्सवधर्मी देश का हिस्सा हैं। मेल-जोल और सामाजिकता हमारे पारस्परिक संबंधों की नींव रही है। मेल-जोल की जैसी परंपरा होली में दिखती है, वैसी अन्यत्र नहीं।

पूरे देश में दिखती है छटा: फाल्गुन पूर्णिमा का त्योहार होली, थोड़ी-बहुत भिन्नता के साथ देश भर में मनाई जाती है। ब्रज की लट्ठमार, फूल और गुलाल की होली के सप्ताह भर के आयोजन से हममें से अधिकतर परिचित हैं। उत्तराखंड में कुमाऊं की होली के कई दिन पहले से गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की मंडली जमने लगती है। महाराष्ट्र में शिमगा की रात को हर मोहल्ले में लकड़ी जलाई जाती हैं और दिन में लोग पूरन पोली बनाते हैं, सूखे गुलाल की होली खेलते हैं। कर्नाटक में सिरसी में, होली से पांच दिन पहले बेदरा वेशा लोकनृत्य होता है। तेलंगाना में होली 10 दिन पहले शुरू हो जाती है। पंजाब के आनंदपुर साहिब में होला मोहल्ला में सिख धर्मावलंबी शक्ति प्रदर्शन करते हैं और रंग की जगह कलाबाजी, कुश्ती, मार्शल आर्ट आदि का प्रदर्शन करते हैं। मध्य प्रदेश में खासकर भोपाल -इंदौर में, होली के बजाय होली के अगले दिन की रंगपंचमी खास होती है। राजस्थान में उदयपुर की संगीतमय होली को देखने विदेशी पर्यटक भी आते हैं। इसी प्रकार, पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन की पारंपरिक अबीर होली की अलग खूबसूरती है। पश्चिम बंगाल, ओडिशा और असम की होली दोल जात्रा कहलाती है, जिसमें राधा-कृष्ण की प्रतिमा को मोहल्ले में घुमाया जाता है। गुजरात में होली पर छाछ से भरे मटके को तोड़ने के लिए मानव पिरामिड बनाया जाता है।

आनंदपुर साहिब में होला मोहल्ला

कृषि से भी है संबंधित: यों तो होली कृषि का भी त्योहार है, क्योंकि फागुन नई फसल के पकने का समय होता है। इसलिए, होलिका दहन में अग्निदेव को जौ-गेहूं अर्पित किया जाता है और नई फसल की बालियों को पकाकर प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जाता है।

बदल गया पर्व का स्वरूप: समय के साथ-साथ होली का स्वरूप बदलता गया और लोग इससे बचने लगे हैं। विकृत स्वरूप के कारण रंगों का चलन कम हो गया है और केवल थोड़े-बहुत अबीर का चलन रह गया है। एकाकी होती जीवनशैली के इस दौर में होली सामूहिकता का आमंत्रण है। होली हंसी के फव्वारों का महोत्सव है। होली पर अपने मन के उल्लास को खुलकर व्यक्त करना अच्छा है, बशर्ते उसमें अश्लीलता और फूहड़पन न हो। हमारी होली सभी के लिए सुरक्षित हो। हमारी होली में भी वही गुलाल हो, जो जीवन को प्रेमिल बनाए। इतना ऊर्जावान, व्यक्ति किसी भी पर्व में नहीं होता, जितना होली में होता है। तभी, ओशो कहते हैं, 'होली जैसा नृत्य करता उत्सव पृथ्वी पर और कहीं नहीं है।' *

बंगाल की पारंपरिक अबीर होली

आत्मप्रेरणा

राजयोगी बीके निकुंज जी

होली पर हम सभी होलिका दहन करते हैं, अगले दिन उमंग-उल्लास के साथ रंग खेलते हैं। लेकिन इसकी सार्थकता तभी है, जब हम सब इस पर्व के भावार्थ को आत्मसात करें।

होली का भावार्थ करें आत्मसात

भारतवर्ष में जितने भी त्योहार-पर्व मनाए जाते हैं, उन सभी में से होली का रंगोत्सव-मंगलोत्सव विशिष्ट और विलक्षण है। रस, रंग से सराबोर यह पर्व आंतरिक उल्लास को उभारने वाला एक सांस्कृतिक पर्व भी है।

सभी मनाते हैं प्रेम से: इस त्योहार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे देश के हर वर्ग, जाति, धर्म एवं संप्रदाय के लोग बिना किसी भेदभाव के बड़े ही उत्साह और आनंद के साथ मनाते हैं। रंगों का यह पर्व प्रकृति से मानव को एकाकार कर तादात्म्य स्थापित कर देता है एवं जीवन को उल्लास के साथ जीने की रीति-नीति के लिए प्रेरित भी करता है।

आत्मशुद्धि का अवसर: हिंदू संस्कृति में अनावश्यक और हानिकारक वस्तुओं को हटा देने और मिटा देने को बहुत ही महत्वपूर्ण बताया गया है और इसी दृष्टिकोण को क्रियात्मक रूप देने के लिए होली का त्योहार बनाया गया है। अतः होली के त्योहार का छिपा हुआ संदेश यही है कि हम अपनी भीतरी और बाहरी गंदगी को ढूंढ़-ढूंढ़ कर साफ करें और चतुर्मुखी पवित्रता की स्थापना करें। मानसिक, सामाजिक, राजनैतिक विकृत विकारों के कंटक जो हमारे रास्ते में बिछे हुए हैं, उन्हें सब मिल-जुल कर खोजें और उनको आग में भस्म कर उत्सव मनाएं।

पौराणिक संदर्भ: पौराणिक दृष्टि से यह त्योहार कब आरंभ हुआ, इसके बारे में विभिन्न मत-मतांतर हैं। इस पर्व से अनेक कहानियां भी जुड़ी हुई हैं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध कहानी है भक्त प्रह्लाद की। इसके अनुसार हिरण्यकश्यप की बहन अर्थात प्रह्लाद की बुआ, प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठी थी, प्रतिवर्ष 'होलिका' नाम से आज तक जलाई जाती है। भविष्य पुराण के अनुसार ढुंढला नामक राक्षसी के द्वारा शिव-पार्वती से यह वरदान तपश्चर्या द्वारा प्राप्त किया गया था कि वह सुर-असुर नर-नाग किसी से न मारी जा सके और जिस बालक को खाना चाहे खा सके। कथा के अनुसार, वरदान देते समय भगवान महादेव ने यह शर्त लगा दी कि वर्ष में केवल होली के एक दिन यह वरदान फलीभूत नहीं होगा और उस दिन जो भी बालक वीभत्स आचरण करते, निर्लज्जतापूर्वक फिरते पाए जाएंगे, उन्हें वह नहीं खा सकेगी। कहा जाता है कि उस राक्षसी से बचने के लिए तरह-तरह के वीभत्स स्वांग रचने की परंपरा इस त्योहार से ही बनी। एक और मान्यता के अनुसार इसी दिन के लिए महर्षि वशिष्ठ जी ने सब मनुष्यों के लिए अभयदान मांगा था, ताकि वे निःशंक होकर इस दिन हंस-खेल सकें। इसी प्रकार भविष्य पुराण में नारद जी ने राजा युधिष्ठिर को होली के संबंध में एक कथा सुनाई, वह इस प्रकार है, नारद जी बोले, 'हे नराधिप! फाल्गुन की पूर्णिमा को सब मनुष्यों के लिए अभय दान देना चाहिए, जिससे समस्त प्रजा भय-रहित होकर हंसे और क्रीड़ा करे। डंडा और लाठी लेकर बालक शूरवीरों की तरह गांव के बाहर जाकर होली के लिए लकड़ी और कंडों का संचय करें। उस होलिका-दहन, हास-परिहास और मंत्र उच्चारण से पापात्मा राक्षसी नष्ट हो जाती है।'

प्रतीकों का समझें भावार्थ: विभिन्न पौराणिक कथाओं से बुद्धिमान लोग समझ सकते हैं कि इसका शब्दार्थ लेना युक्ति-संगत नहीं है बल्कि भावार्थ अथवा लक्षणार्थ लेना ही विवेक-सम्मत है क्योंकि केवल लकड़ी और कंडों के दहन से तो सभी अनिष्टों का नाश हो नहीं सकता, न ही कभी ऐसा हुआ है। वास्तव में तो लकड़ी और कंडे, मनुष्य के स्वभाव और उसके कर्मों में जो दुख देने वाली आदतें हैं, जो कटुता, शुष्कता, क्रूरता तथा विकार रूपी झाड़-झंखाड़ हैं, उनके प्रतीक हैं और अग्नि 'योगाग्नि' का प्रतीक है। अतः बुरे संस्कारों, नास्तिकता तथा अभिमान रूप होलिका इत्यादि को परमात्मा रूप दिव्य अग्नि की पाप-दह शक्ति में होम कर देना या योगाग्नि में भस्म कर देना ही 'होलिका-दहन' है। इससे मनुष्य के मन में हर्ष और आह्लाद होना स्वाभाविक है, इसलिए यह हास-परिहास का त्योहार माना गया है।

'अभय दान' देने का अर्थ भी यही है कि हम हिंसा, क्रोध, द्वेष इत्यादि से वशीभूत होकर व्यवहार न करें, जिससे कि हमसे किसी को भय हो। सोचने की बात है कि लकड़ी और कंडों को जलाने से तो 'पापात्मा राक्षसी' का नाश नहीं होगा न? क्योंकि 'पापात्मा राक्षसी' तो हमारे मन में बैठी हुई आसुरी वृत्तियों तथा पापजनक कर्मों की ही सूचिका है। अतः हम ज्ञान-रंग से एक-दूसरे को रंग कर, मन के कुभावों तथा कुसंस्कारों का कचरा दग्ध कर दें- यही होली और होलिकोत्सव का वास्तविक रहस्य है, प्रेरणा है। *

हास्य गजल / सूर्य कुमार पांडेय

क्या करें

उम्र ने यह की है साजिश, क्या करें?
हो गए हैं गाल किशमिश, क्या करें?
ऐसे किशमिश होने का क्या फायदा,
जब उन्हें हम कर रहे 'मिस', क्या करें?
अकड़ बॉडी में है, जाती ही नहीं,
कह रही वह, करिए वर्जिश, क्या करें?
मेन ऑफिस के ही नखरे इतने हैं,
खोल कर इक ब्रांच ऑफिस, क्या करें?
एक से ब्रेकअप, फिर दूजे से तलाक,
जानूं, तू भी निकली सेल्फिश, क्या करें?
अपने घर का है अलग ही संविधान,
कर रहे हम उनकी मालिश, क्या करें?

हास्य व्यंग्य / शरद उपाध्याय

फेसबुकिया नायिका के फाग

प्रिये, अब मन बिल्कुल बदल गया है। होली की नायिकाएं अब फीकी पड़ गई हैं। बस बार-बार फेसबुक पर चिपका हुआ तुम्हारा गुलाबी चेहरा याद आ रहा है। होली आ चुकी है। चारों ओर रंग ही रंग बिखरा पड़ा है। कल्पनाएं हिलोरे ले रही हैं। फेसबुक पर तुम्हारे टीपकर लिखे फाग पर 'लाइक' के साथ 'कमेंट' भी कर चुका हूं। तुम 'ऑफलाइन' हो, पर बार-बार दूसरों की वॉल पर 'कमेंट' की पिचकारियां फेंकती फिर रही हो, यह ठीक नहीं है। यह हमारे शाश्वत प्रेम के खिलाफ है। इससे न जाने कितने रंग भरे गुब्बारे मेरे सीने पर फूटने लगे हैं। तुम्हारे लिए ही एक पुराना 'रंगीन' फोटू, जिसमें बीवी भी नहीं पहचान पाती, फेसबुक पर चिपका रखा है। इसी के सहारे साल भर से हम रसिया गा रहे हैं। तुम्हारा जैसे ही सुंदर मुखड़ा देखते हैं, झट से लाइक कर देते हैं, और बिना पढ़े ही अच्छा सा कमेंट कर डालते हैं। अब इतने सुंदर चेहरे को देखकर भला कहां कुछ पढ़ने-लिखने का मन करता है। अब तुम भी जरा सोचो, इतने दिनों से 'ऑफलाइन' हो। अब होली के अवसर पर थोड़ा-सा डिस्काउंट तो दे दो, चंद पलों के लिए तो 'ऑनलाइन' हो जाओ। देखो, मैंने तुम्हारे लिए कितना त्याग किया है। लाख 'डिसलाइक' की स्थिति होने पर भी सैंकड़ों-हजारों बार 'लाइक' किया। यही सोचकर कि अब कुछ तो तुम्हारी तरफ से अबीर उड़ेगा। कभी तो तुम मेरे साथ फाग गाओगी। अभी-अभी तुमने होली पर जो प्रेम का रसिया वॉल पर डाला है, दसवीं कक्षा की किताब से नकल करने के बाद भी अच्छा है। हालांकि उसमें मात्राओं की कई गलतियां हैं, पर कोई बात नहीं। ये सारी बातें रंगीन भावनाओं के कारण क्षम्य हैं। पर एक बात सच-सच बताओ। ये जो तुमने 'स्टेटस', 'सिंगल' डाल रखा है, वो सच तो है ना! नहीं तो मैं बेकार ही काल्पनिक फाग गाकर होली न निकाल दूं। अब चारों ओर होली का गुलाल उड़ रहा है। मेरा मन भी कर रहा है कि तुम्हारे गोरे गालों पर थोड़ा सा अबीर मल दूं। पर एक बात का डर लगता है, तुमने फेसबुक पर जो सुंदर फोटो डाल रखा है, वो तुम्हारा ही तो है ना? तुम्हारे इस सुंदर फोटो पर विश्वास करके ही होली की धूम को छोड़कर नेट पर बैठा हूं। गूगल प्लस पर तुमने फोटो की जगह 'फूल' डाल रखा है। कहीं तुम मुझे 'फूल' तो नहीं बना रहीं? एक्स पर भी तुम न जाने किनको 'फॉलो' करती नजर आती हो। अब ये बातें सोचता हूं तो दिल बैठ जाता है।

एक बार तुमने कमेंट लिखने में 'जेंडर-मिस्टेक' कर दी तब ऐसा लगा था कि कहीं तुम्हारी आईडी 'फेक' तो नहीं है। भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि ऐसा नहीं हो। मेरा विश्वास है कि ऐसा नहीं होगा। इसीलिए तो बाहर उड़ती हुई गुलाल को छोड़कर मन की पिचकारी लिए 'ऑनलाइन' बैठा तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं। ये 'ऑफलाइन' की लंबी अंधेरी रात कब खत्म होगी। बस आ भी जाओ। किसी बात का बुरा मत मानना। इस सूने जीवन में होली का रंग तो बिखेर दो। मैं कब से नेट खोलकर बैठा हूं। बस एक बार.... तुम्हें होली की कसम! *

लघुकथा / अशोक वाधवाणी

होली है ..!

आत्माराम मित्रों के साथ होली खेलने के लिए सुबह-सुबह सफेद कुर्ता-पायजामा पहनकर घर से निकले। चौराहे पर देखा, ढेर सारे बच्चे पिचकारी से एक-दूसरे को रंग रहे हैं। उन्हें वहां से गुजरते देखकर बच्चे ठिठक गए। इन बच्चों में एक बच्चा जो उम्र में कुछ बड़ा था, बाकी बच्चों से बोला, 'अंकल को जाने दो। गलती से उन्हें रंग लग गया तो हमारी खैर नहीं।'

आत्माराम ने जिज्ञासावश एक बच्चे से इसका कारण पूछा तो उसने बताया, 'थोड़ी देर पहले हमने एक बुजुर्ग पर पिचकारी से रंग डाल दिया था, वे आगबबूला हो गए। हमको मारने के लिए पत्थर तक उठा लिया। हम सब डर कर भाग गए।'

यह सुनकर आत्माराम बच्चों से बोले, 'मैं तो अपने दोस्तों के साथ रंग खेलने जा रहा था। अब शुरुआत तुम बच्चों से ही करूंगा।'

आत्माराम की बात सुनकर सारे बच्चे खुशी से नाच उठे। बच्चों ने 'होली है..!' कहकर उन्हें सर से पांव तक रंग दिया। आत्माराम भी बच्चा बनकर बच्चों की खुशी में शामिल होकर नाचने-गाने लगे। रास्ते से गुजरने वाले लोग बच्चों के साथ एक बुजुर्ग की इस तरह मस्ती देखकर रुक कर देखने लगे। वे सभी अचंभित भाव से मंद-मंद मुस्करा रहे थे। *

कुंडलियां

श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल'

अंग-अंग में रंग

होली में मुस्काए के, करके तिरछे नैन।
बातों का रस घोल के, गोरी लूटै चैन।
गोरी लूटै चैन, नैन अपने मटकाती।
संकेतों के तीर, चला कर है मुस्काती।
कह 'कोमल' कविराय, नैन से मारे गोली।
अंग-अंग में रंग, रंगीली आई होली।।
होली आई झूम के, मन में उठी तरंग।
अंग-अंग थिरकन लगे, बजते ढोल मृदंग।
बजते ढोल मृदंग, रंग की मस्ती छाई।
एक नया उल्लास, हास ले होली आई।
कह 'कोमल' कविराय, नैन तिरछे कर बोली।
चूक रहे क्यों आज, संग में खेलो होली।।

फागुन के दिन चार रे रसिया

होली के स्वरूप में भले ही अब काफी कुछ बदल चुका है। लेकिन इस पर्व का मूल स्वरूप लोकसंस्कृति, पुराण, प्रकृति परिवर्तन और जीवन की सकारात्मकता से जुड़ा है। रंगोत्सव, हमें न केवल अपने परिवार, आस-पड़ोस और समाज से जोड़ता है, साथ ही अपने गौरवमयी सांस्कृतिक धरोहर और लोकरंग से भी संबद्ध करता है।

लोकपर्व
सुधा रानी तैलंग

जीवन को इंद्रधनुषी रंगों से भरने, रंगों का त्योहार होली एक बार फिर से हम सबके लिए रंगों की फुहार और प्रीत राग की बौछार लेकर आया है। रंग पर्व के स्वागत में अमलतास और पलाश के पेड़, पुष्प गुच्छों से आच्छादित हो गए हैं। आम के पेड़ों पर बौर आ गए हैं। हर ओर प्रकृति बसंत के उत्सव में मगन नजर आ रही है।

सुनाई देते हैं फाग के मोहक सुर

बसंत ऋतु के आते ही समूचा परिवेश रंगमय हो जाता है। माघ शुक्ल पंचमी से ही ग्रामीण अंचलों में फाग गाना शुरू हो जाता है। वैसे होली के त्योहार का विधिवत आरंभ बसंत पंचमी से हो जाता है। तभी से लेकर होली तक हर उत्सवप्रेमी मन मौज-मस्ती, रंग, अबीर, ढोल-मजीरे की थाप के संग पुलकित,चंचल हो उठता है। मन गुनगुनाने लगता है, *अब दिन आए बसंती रे।*

हास-परिहास संग संगीत का उत्सव

होली हास-परिहास, मौज-मस्ती, व्यंग्य-विनोद का उत्सव है। अबीर- गुलाल के रंगों की इंद्रधनुषी फुहार, टेसू के केसरिया रंग, भांग, ठंडाई और गुझियों की मिठास के संग होली के हुरियारों और मसखरों की टोली, घर-घर से लकड़ियां और चंदा मांगते बच्चे, ढोल, डफली, झांझर और मांदल के उमगते सुरों में फाग के फड़, फगुआ, होरी गारी गीत और लोक गीतों की सुर संगीत लहरियों के संग, चहुंओर उल्लास और खुशियों के रंग भर देती है। खासकर ग्रामीण अंचल में फागें समूचे परिवेश को रंगमय-संगीतमय कर देती हैं-

फागुन आयो फागुन आयो रे,
रंग दे रसिया,
होली खेलूं रसिया, फागुन आयो।

तन-मन हो उठता है पुलकित

फागुन की दस्तक ही तन-मन को पुलकित कर देती है। होली में रंग-गुलाल की मस्ती छा जाती है। होली के दिन, लोग एक-दूजे को गले लगाते गुलाल का तिलक लगाकर शुभकामनाएं देते हैं और सामाजिक समरसता, सद्भाव के रंग बिखेरते हुए मजीरों की थाप पर जमकर थिरकते हैं। होली में युवाओं के संग बच्चों और बड़ों का हुजूम गलियों, चौराहों और सड़कों में मस्ती, उल्लास और उत्साह के संग चारों ओर सतरंगी रंगों को बिखेरता हुआ दिखाई देता है। बच्चों की टोली की मौज-मस्ती, हुड़दंग के संग एक-दूजे पर पिचकारी के रंगों की बौछार से समूचा परिवेश रंगमय हो जाता है।

जुड़ी हैं कई सांस्कृतिक मान्यताएं

भारतीय संस्कृति में होली का पौराणिक महत्व भी है। यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। अन्याय पर न्याय की और असत्य पर सत्य का प्रतीक लोक पर्व भी है। पुराणों के अनुसार प्रथम पुरुष मनु का जन्म भी इसी तिथि पर हुआ था। इसीलिए इसे मन्वादितिथि भी कहा जाता है। भगवान शंकर के द्वारा अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म करने के कारण इसे मदनोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। प्रकृति के अंगड़ाई लेते ही बसंत उत्सव के बाद नए अनाज के आगमन की खुशी में नव शस्येष्टि पर्व के रूप में मनाए जाने का उल्लेख प्राचीन ग्रंथो में भी मिलता है। होलिका दहन वैदिक सोम यज्ञ की परंपरा का वाहक है। फाल्गुन पूर्णिमा पर अन्न पकने पर जौ और गेहूं की बालियों को देवताओं को समर्पित करने के बाद ही उपभोग करने की परंपरा रही है। यह परंपरा आपसी प्रेम और सौहार्द का प्रतीक है। साथ ही होली में मंत्रोच्चारण के साथ गेहूं, चने की बालियां, नव अन्न के साथ धृत, पुष्प, जड़ी-बूटियां, गोबर के उपले, कंडे और सुगंधित द्रव्यों को अग्नि में समर्पित कर वातावरण को शुद्ध, परिष्कृत करके धूम्र कण बादलों को आमंत्रण देते हैं और वर्षा होती है। साथ ही होलिका दहन से अहंकार, ईर्ष्या और बुराइयों का विसर्जन होकर समूचे परिवेश मे सौहार्दता और प्रेम का बातावरण निर्मित होता है।

मथुरा में फूलों वाली होली खेलते स्थानीय लोग

विश्वप्रसिद्ध ब्रज मंडल की होली

होली का लोक पर्व पूरे देश में कई तरह के रंग बिखेरता है। लेकिन विशेष रूप से इस पर्व का ब्रज से गहरा नाता है। मथुरा, वृंदावन, ब्रज मंडल के मंदिरों में फाग के रंगों की फुहार और फूलों की बौछार तो समूचे विश्व के पर्यटकों और श्रद्धालुओं को बरबस ही आकर्षित करती है। जिस तरह द्वापर युग में ब्रज में होरी खेलते हुए भगवान श्री कृष्ण और उनके सखा, गोपियों के संग राधा को रंगों में सराबोर कर देते हैं। वो परंपरा आज भी चली आ रही है।

रंगोत्सव और उसमें निहित संदेश

होली के रंग जीवन में खुशियों के रंग भर देते हैं, चारों ओर, प्रेम, एकता के रंग बिखर जाते हैं। वैर भाव छोड़ सब एक-दूजे को प्रेम के रंग से रंग देते हैं। स्नेह प्रेम रंग में रंगे प्रेमी के लिए पूरा संसार ही रंगमय हो जाता है। होलिका दहन के दूसरे दिन धुलेंडी में उड़ती गुलाल और अबीर से पूरा आसमान ही सतरंगा हो जाता है। तभी तो हुरियारे कह उठते हैं, उड़त गुलाल लाल भए अंबर।

पौराणिक मान्यता के अनुसार होली में समूचे आसमान में गुलाल, अबीर का रंग उड़ाने से रजोगुण और तमोगुण के प्रभाव कम होकर उत्सव का सात्विक स्वरूप निखरता है और देवी-देवता प्रसन्न होते हैं। मान्यता है, इस दिन रंग और अबीर से खेलने से नकारात्मकता का विनाश होता है और निराशा दूर होती है। मन के विकार दूर होते हैं। चारों ओर सकारात्मक प्रवाह आता है। गुलाल के स्पर्श से लोगों के व्यक्तित्व और विचारों में सकारात्मकता आती है। होली के रंग हमें प्रेरित करते हैं कि हम अपने और दूसरों के जीवन को भी खुशियों से सराबोर रखें। *

उल्लास
भूपसिंह 'भारती'

होळी की खुम्मारी

बरसाग्यो रंग-गुलाल, होळी सै मतवारी।
होळी रह कस कै मार, यार तू पिचकारी।।
खेलै होळी छैल-छबीली,
गोरी हो गई रंग-रंगीली,
अंगिया काळी-पीळी, हुई बलमा म्हारी।
फागण आयो यो मस्तानों,
मस्त अदा कर री दीवानों,
दूंगी भोत उल्हाणों, करी जो बदकारी।

बलमा खेलण आयो होळी,
कस कै भरली गोरी कोळी,
रंगग्यो दामण चोली, मार कै पिचकारी।
होळी को यो गजब अखाड़ों,
बजै 'भारती' ढोल नगाड़ों,
माड़ो होग्यो जाड़ो, होळी की खुम्मारी।

रंगों का संबंध केवल होली खेलने से ही नहीं होता है। कौन-सा रंग आपको पसंद है, इससे आपके मिजाज और व्यक्तित्व के राज का भी पता चलता है, कैसे बता रहे हैं आपको।

रंगों की पसंद बताती है आपके मिजाज का राज

पर्सनालिटी
शिखर चंद जैन

समाज शास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों की मानें तो किसी व्यक्ति की रंग की पसंद से उसके व्यक्तित्व और स्वभाव का काफी हद तक पता लगाया जा सकता है।

सफेद रंग: सफेद रंग अधिक पसंद करने वाले दूरदर्शी और आशावादी माने जाते हैं। ये लोग प्लानिंग करने में माहिर होते हैं, इसीलिए अधिकतर कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। ये लोग वर्कलाइफ और पर्सनल लाइफ में अच्छा बैलेंस बनाए रखते हैं। जो सफेद रंग पसंद करते हैं, वे शांति प्रिय होते हैं। नए लोगों से जल्दी मित्रता नहीं बढ़ाते हैं। किसी भी नए स्थान पर या नए लोगों के बीच सहज महसूस नहीं करते क्योंकि ये संकोची स्वभाव के होते हैं।

लाल रंग: लाल रंग पसंद करने वाले हमेशा सजग रहते हैं। इनके जीवन में प्रेम का बहुत अधिक महत्व होता है। ये लोग अच्छे प्रेमी सिद्ध हो सकते हैं। लाल रंग उत्साह और जोश का प्रतीक है और इसी वजह से इसे पसंद करने वाले जोशीले होते हैं। ये लोग जीवन को पूरे उत्साह के साथ जीते हैं। दूसरों के स्वभाव को बहुत जल्दी समझ लेते हैं और स्वयं को उसके मुताबिक एडजस्ट कर लेते हैं।

पीला रंग: पीले रंग के शौकीन आमतौर पर हंसमुख स्वभाव वाले होते हैं। ये जीवन को सकारात्मक रूप में जीते हैं। ये लोग नए विचारों को अपनाने में यकीन रखते हैं। खुले मन के होने के कारण ये दूसरों को सही मार्गदर्शन देते हैं। सभी की मदद के लिए तैयार रहते हैं। विपरीत समय में भी यह ईमानदारी के साथ कार्यों में लगे रहते हैं और अपनी विल पावर के बूते सफल हो जाते हैं।

नीला रंग: नीले रंग को पसंद करने वाले स्वाभिमानी होते हैं। ये मदद लेना पसंद नहीं करते हैं। अपने प्रेमी को पूरा समय देते हैं और उसकी जरूरतों का ध्यान रखते हैं। इन्हें भरोसेमंद माना जा सकता है। किसी का विश्वास नहीं तोड़ते हैं और किसी अन्य व्यक्ति पर आसानी से विश्वास भी नहीं करते हैं। मित्रता करने से पहले पूरी सावधानी रखते हैं और जब इन्हें यह सुनिश्चित हो जाता है कि व्यक्ति मित्रता करने योग्य है, तब ही मित्रता करते हैं। अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह पूरी शिद्दत से करते हैं।

हरा रंग: हरे रंग के दीवाने डाउन टू अर्थ स्वभाव वाले होते हैं। हर परिस्थिति में अपने स्वभाव को बनाए रखते हैं। सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद भी सामान्य इंसान की भांति बने रहते हैं। यदि इनके आस-पास कोई दुखी व्यक्ति होता है तो उसके दुख बांटने का प्रयास करते हैं। ये बहुत शांतिप्रिय इंसान होते हैं। जिस प्रकार हरा रंग आंखों को सुखद अहसास देता है, ठीक वैसा ही स्वभाव हरा रंग पसंद करने वाला भी होता है।

गुलाबी रंग: जिन लोगों को गुलाबी रंग अधिक पसंद होता है, वे जीवनसाथी के प्रति काफी भावुक होते हैं और जीवन साथी का ध्यान रखने वाले होते हैं। इनके मित्रों की संख्या भी अधिक रहती हैं। मित्रों से विशेष स्नेह प्राप्त करते हैं। सभी लोगों से प्रेम से मिलते हैं। इनका स्वभाव काफी रोमांटिक होता है। ये लोग दूसरों के गुणों पर अधिक ध्यान देते हैं और बुराइयों को अधिकतर नजरअंदाज करते हैं।

भूरा रंग: जिन लोगों को ब्राउन (भूरा) कलर प्रिय होता है, वे लोग आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होते हैं। सफलता मिलने के बाद भी घमंड और अहंकार से दूर रहते हैं। इनका स्वभाव मित्रतापूर्ण और विनम्र रहता है, इस कारण अधिक सफल होने के बाद भी लोग सरल होते हैं। दूसरों की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। दूसरों के दुखों को दूर करने का प्रयास करते रहते हैं। दूसरों को इनका साथ बहुत प्रिय होता है। कठिन परिस्थितियों को काबू करने के लिए धैर्य और मेहनत का सहारा लेते हैं। सूझ-बूझ से विपरीत हालातों से बाहर आ जाते हैं।

जामुनी रंग: जामुनी रंग पसंद करने वाले लोगों के स्वभाव में रचनात्मकता होती है, इस कारण किसी भी काम को अलग-अलग तरीके से करने में इन्हें मजा आता है। इन्हें भीड़ का हिस्सा बनना पसंद नहीं होता है। भीड़ से अलग काम करने पर अधिक विश्वास रखते हैं। ये लोग दूसरों की नकल करना पसंद नहीं करते हैं और ना ही ये चाहते हैं कि कोई इनके कामों की नकल करे। ये दूरदर्शी भी होते हैं।

काला रंग: जिन लोगों को काला रंग पसंद होता है, वे थोड़े रूढ़िवादी हो सकते हैं। साथ ही, इन लोगों को गुस्सा भी बहुत जल्दी आता है। इन्हें किसी भी काम में कोई बदलाव पसंद नहीं होता है। किसी भी प्रकार का बदलाव आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते हैं। ये लोग अपनी शक्ति बढ़ाना चाहते हैं। इन्हें लोगों से उचित दूरी बनाए रखना पसंद होता है। *

उमंग-तरंग

मीठी-मीठी यादों के बीच प्रेम के प्यारे-प्यारे रंग

होली का पर्व हर कोई बहुत उत्साह-उमंग से मनाता है। छोटे पर्दे के कलाकार भी इसमें पीछे नहीं रहते। इनकी सबसे मीठी यादगार होली कब और क्यों रही? होली के पर्व को ये किस नजरिए से अहम मानते हैं? इस बार होली कैसे मनाएंगे? बता रहे हैं, चर्चित टीवी शोज के कुछ प्रमुख कलाकार।

होली पर किसी को भी छेड़ सकते हैं : विभव रॉय

इन दिनों स्टार भारत पर आ रहे शो 'शैतानी रस्में' में विभव रॉय राजकुमार पीयूष के लीड रोल में नजर आ रहे हैं। होली का जिक्र होने पर वह अपनी पिछले साल की होली याद करते हुए बड़े उत्साह से बताते हैं, 'अपनी पिछली होली मैंने यूएस में अपने भांजे के साथ मनाई थी। जहां हमने स्विमिंग पूल में रंग मिलाकर उसमें होली खेली और खूब मस्ती की थी। उस दिन मेरी बहन ने अपने हाथों से सभी के लिए गुझिया बनाई थी, जो बहुत टेस्टी थी। गुझिया के साथ ढेर सारे कैंडी, चॉकलेट्स भी सभी के लिए रखे गए थे। सबने मजे से खाया। मैं अपनी पर्सनल लाइफ में भी एक प्रैंक्स्टर हूं। सभी से हंसी-मजाक करता रहता हूं। होली से जुड़ी मुझे सबसे अच्छी बात यह लगती है कि इस दिन आप किसी के भी रंग लगा सकते हैं, उसे छेड़ सकते हैं, उसके साथ मजाक-मस्ती कर सकते हैं। होली एक ऐसा दिन है, जब आपको अपनों के साथ हंसने-हंसाने का मौका मिलता है। इस होली पर मैं अपने शो 'शैतानी रस्में' की शूटिंग में बिजी रहूंगा, लेकिन शूटिंग के बाद अपने को-स्टार्स और क्रू मेंबर्स से साथ होली जरूर मनाऊंगा। आप सभी को होली की शुभकामनाएं!' *

रंग सबसे खूबसूरत जरिया हैं, अपने परिजनों से मिलने का : गरिमा परिहार

आजकल सोनी सब के शो 'पुष्पा इंपॉसिबल' में गरिमा परिहार ने दीप्ति पारीख पटेल के किरदार में खूब रंग जमा रखे हैं। होली का जिक्र आते ही वह अपनी पिछले साल की खेली होली याद करती हैं, 'बीते साल मैंने शो 'पुष्पा इंपॉसिबल' की पूरी टीम के साथ बड़ी ही धूमधाम से होली खेली थी। असल में होली खेलना हमारे शो के एक सीक्वेंस का हिस्सा था। इसकी शूटिंग के दौरान जब भी हमें ब्रेक मिलता था, हम सभी एक-दूसरे पर पिचकारी चलाने लगते थे। जब पिचकारी से बात नहीं बनती तो बाल्टियों से भर-भर कर एक-दूसरे पर रंग वाला पानी डालते। यह सिलसिला करीब बारह घंटे चला, हमने खूब मस्ती की। मुझे होली से जुड़ी सबसे अच्छी बात यह लगती है कि इस दिन सभी लोग एक हो जाते हैं। भले ही हम अपनों से दूर क्यों न हों, लेकिन कोशिश यही रहती है कि होली के दिन सब मिलें। इस त्योहार पर रंग सबसे खूबसूरत जरिया हैं, अपने परिजनों से मिलने का। इस बार की होली मेरे लिए बहुत खास है, क्योकि होली वाले दिन ही मेरा जन्मदिन है। इस साल मैं अपना जन्मदिन, होली त्योहार के साथ मनाऊंगी। *

सारे गिले-शिकवे भुलाकर प्रेमपूर्वक रंग खेलने का दिन : स्वाति शर्मा

चैनल शेमारू उमंग के नए शो 'चाहेंगे तुम्हें इतना' में स्वाति शर्मा ने आशी के किरदार में सबका दिल जीत लिया है। वह होली से जुड़ी अपनी यादें ताजा करते हुए बताती हैं, 'होली मेरा सबसे पसंदीदा त्योहार है। मेरी सबसे यादगार होली तब की है, जब हम कई साल पहले अपने नए घर में शिफ्ट हुए थे। हमारे पड़ोस में तब कोई रहने नहीं आया था। हमने बगल वाले अंडरग्राउंड टैंक से बकेट से पानी निकालकर, उसमें कलर मिलाकर जमकर होली खेली थी। लेकिन जब मम्मी-पापा को हमारी शरारत पता चली, हमें खूब डांट पड़ी कि हमने इतना ढेर सारा पानी बर्बाद क्यों किया। तब बचपना था, लेकिन अब इस बात को हम अच्छे से समझते हैं कि होली में पानी बर्बाद नहीं करना चाहिए। अब तो हम सबसे कहते हैं, 'होली सिर्फ सूखे रंगों से ही खेलें, पानी बर्बाद न करें।' हमें होली की सबसे प्यारी बात यह लगती है कि इस त्योहार के दौरान हम अपने सारे गिले-शिकवे भूलकर आपस में प्रेम पूर्वक रंग खेलते हैं, गले मिलते हैं। इस बार की होली मैं शो 'चाहेंगे तुम्हे इतना' के सेट पर अपने कास्ट और क्रू के साथ मनाऊंगी।' *

समावेशी भावना होली को सुंदर-अनोखा उत्सव बनाती है : राकेश बेदी

एंड टीवी के पॉपुलर शो 'भाभीजी घर पर हैं' में भूरे लाल का किरदार निभा रहे राकेश बेदी से जब होली की बात होती है तो उन्हें अपने बचपन के दिनों में होली पर की गई शरारतें याद आ जाती हैं। वह बताते हैं, 'होली पर हम बच्चे पानी की बंदूकें और रंगीन पानी की बाल्टियां लेकर बैठ जाते थे, जैसे ही कोई पड़ोसी अपने घर से बाहर निकलता, हम उस पर हमला बोल देते। हमारे पड़ोसियों में एक रूड अंकल थे। हमने उनके साथ मजाक करने का साहस किया। हम बच्चों ने जाकर उनके घर की डोर बेल बजाई, जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला, हमने रंगों से भरी बाल्टी उन पर उड़ेल दी और छिपने के लिए भागे, लेकिन अंकल जी गुस्से में आने के बजाय घर के भीतर गए, अपनी रसोई से सूखे आटे की थैली उठा लाए और हमारे ऊपर छिड़कने लगे। इस मस्ती में दूसरे पड़ोसी भी शामिल हो गए। सबको खूब मजा आया। होली के पर्व को सभी उम्र, पृष्ठभूमि और सामाजिक वर्गों के लोग एकसाथ मनाते हैं। ऐसी समावेशी भावना होली को एक सुंदर और अनोखा उत्सव बनाती है।' *

प्रस्तुति : हरिभूमि फीचर्स

फिल्म-जगत / अशोक जोशी

फिल्मों में होली के रंग खूब बिखरे हैं। दर्शकों के लिए होली एक विशेष आकर्षण रही है, विशेषकर होली के गीत। फिल्मों में होली, कहानी को आगे बढ़ाने या टर्निंग प्वाइंट लाने में बहुत कारगर साबित हुई है। फिल्मों में होली के रूप पर एक नजर।

फिल्मों में भी खूब बिखरे हैं होली के रंग

होली के रंग हमारे बीच ही नहीं, फिल्मी पर्दे पर भी दिखाई देते हैं। बॉलीवुड के कई निर्माता-निर्देशकों ने अपनी फिल्मों में होली के सतरंगी रंग बिखेरे हैं। फिल्मों में ये रंग कभी बदले या फिर विरह के रूप में दिखते रहे हैं। इनसे इतर प्रेम के गहरे रंग को भी कई बार होली के माध्यम से पर्दे पर दिखाकर दर्शकों के दिलों की धड़कनें बढ़ाई हैं। फिल्म के कथानक के साथ होली-गीतों को भी फिल्मों में बहुत खूबसूरत रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। कई फिल्मों में होली के गीत इतने लोकप्रिय हुए कि आज भी होली के मौके पर दिनभर सुनाई देते हैं।

काफी पुराना है इतिहास: जहां तक फिल्मों में होली के दृश्यों की बात है तो इसका इतिहास काफी पुराना है। दिलीप कुमार की पहली फिल्म 'ज्वार भाटा' में होली नजर आई थी। फिल्म के निर्देशक अमिय चक्रवर्ती ने 1944 में होली के दृश्य शूट करके एक इतिहास रचा था। इसके बाद दिलीप कुमार की फिल्म 'आन', 'कोहिनूर' और 'सौदागर' में भी होली के रंग देखने को मिले। इसके बाद भी फिल्मों में होली नजर आती रही।

फिल्मों में होली के यादगार गीत: एक समय ऐसा आया जब फिल्मों में होली के गीत फिल्म का विशेष आकर्षण बन गए। फिल्मकार यश चोपड़ा ने तो इसमें उस दौर के निर्देशकों को बहुत पीछे छोड़ दिया था। अपनी फिल्म 'सिलसिला' में उन्होंने 'रंग बरसे भीगे चुनर वाली' होली का एक लोकप्रिय गीत दिया। इसके बाद 'मशाल' में 'होली आई, होली आई, देखो होली आई रे', 'डर' में 'अंग से अंग लगाना' और बाद में 'मोहब्बतें' में उनके बेटे निर्देशक आदित्य चोपड़ा ने 'सोनी-सोनी अंखियों वाली, ' में बड़े पर्दे पर होली के रंग बिखेरे। फिल्म 'मदर इंडिया' का गाना 'होली आई रे कन्हाई' आज भी याद किया जाता है। इसके अलावा 'नवरंग' का 'जा रे हट नटखट' और 'लम्हे' का 'मोहे छेड़ो न नंद के लाला' गाने ने भी होली का फिल्मों में प्रतिनिधित्व किया।

फिल्म 'मोहब्बतें' में कोएक्टर्स के साथ शाहरुख

'वक्त' में अक्षय-प्रियंका चोपड़ा

फिल्म 'बागबान' में अमिताभ के साथ हेमा

'शोले' में मस्ती के रंग में धर्मेंद्र-हेमा

स्टार्स ने खूब बिखेरे होली के रंग : फिल्मों में होली का रंग बिखेरने में स्टार्स खूब आगे रहे। इनमें अमिताभ-रेखा पर फिल्माया गया गीत 'रंग बरसे भीगे चुनर वाली' आज भी याद किया जाता है। इस गीत के लंबे समय बाद अमिताभ ने हेमा मालिनी के साथ 'बागबान में 'होली खेले रघुवीरा' के जरिए एक बार फिर रुपहले पर्दे को रंगीन किया। अमिताभ, विपुल शाह की 'वक्त' में अक्षय कुमार और प्रियंका चोपड़ा के साथ 'डू मी, फेवर, लेट्स प्ले होली' गाते हुए भी खूब जंचे। हिंदी फिल्मों की एक और जोड़ी, धर्मेंद्र और हेमा मालिनी ने होली को फिल्मों में ऐतिहासिक बनाया है। इस जोड़ी पर फिल्माया फिल्म 'शोले' का गीत 'होली के दिन दिल खिल जाते हैं' हिट रहा फिर इस जोड़ी ने फिल्म 'राजपूत' में 'भागी रे भागी रे भागी ब्रजबाला, कान्हा ने पकड़ा रंग डाला'गाकर भरपूर होली खेली। बॉलीवुड में 'होली' और 'होली आई रे' नाम से और 'फागुन' नाम से दो फिल्मों का निर्माण हो चुका है।

'डर' में सनी देओल-जूही चावला

फिल्मी कथा में होली का तरह-तरह से उपयोग: फिल्मों में होली से जुड़ा दिलचस्प पहलू यह भी है कि जहां कुछ फिल्मकारों ने होली को फिल्म की कहानी आगे बढ़ाने के लिए उपयोग किया, तो कुछ ने टर्निंग प्वाइंट लाने के लिए। कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने इसे सिर्फ मौज-मस्ती और गाने फिट करने के लिए फिल्म में डाला। फिल्मकार राजकुमार संतोषी ने अपनी फिल्म 'दामिनी' में होली के दृश्य का उपयोग फिल्म में टर्निंग प्वाइंट लाने के लिए किया, जबकि 'आखिर क्यों' के गाने 'सात रंग में खेल रही है दिल वालों की होली रे' और 'कामचोर' के 'मल दे गुलाल मोहे' में इनके जरिए फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाया गया।

नायकों ने नायिकाओं के जीवन में भरे रंग: कई फिल्मों में नायक होली के माध्यम से नायिकाओं के जीवन में रंग भरने की कोशिश करते भी दिखे। फिल्म 'धनवान' में राजेश खन्ना ने रीना रॉय के लिए 'मारो भर-भर पिचकारी' तो 'फूल और पत्थर' में धर्मेंद्र, मीना कुमारी के लिए 'लाई है हजारों रंग होली' गाते दिखे। इसी तरह फिल्म 'कटी पतंग' में राजेश खन्ना पर फिल्माए गाने 'आज न छोड़ेंगे बस हमजोली' ने आशा पारेख को अपने अतीत की याद दिला दी थी।

अब कम दिखते हैं होली के रंग: अब फिल्मों में रुचि रखने वाले दर्शकों की पसंद काफी बदल चुकी है। कभी-कभी ही फिल्मों से होली गीत दिखते हैं। बीते बरस की फिल्मों में 'जॉली एलएलबी-2' में अक्षय कुमार और हुमा कुरैशी पर फिल्माया एक होली गाना दिखाई दिया था। लेकिन वास्तविकता यही है कि आजकल की फिल्मों में होली के रंग फीके पड़ गए हैं। *